तोड़ो बंदिशें

Break the Chains

FAT
Feminist Approach to Technology

BECOMES

तोड़ो बंदिशें

Break the chains

तोड़ो बंदिशें जल्द और जबरन (ज़बर दस्ती) शादी के खिलाफ एक सामूहिक अभियान है जो फैट के युवा महिला नेतृत्व कार्यक्रम के स्तर 2 की लड़कियां चला रही हैं।

यह अभियान 2015 में दक्षिण दिल्ली में कम–आय वाले शहरी समुदायों की 31 लड़कियों ने शुरू किया। इस भाग 2 में बिहार और दिल्ली की लड़कियों ने साथ मिलकर अपनी ज़िन्दगी की वास्तविक कहानियों को ईमानदारी से सामने लाने के लिए मिलकर काम किया है।

युवा महिलाओं ने अपने समुदायों में जल्द और जबरन शादी के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए फोटो–कहानियां और फिल्में बनाई और स्क्रीनिंग और द्वार–से द्वार अभियान से इनका प्रचार करके, तैयार होने से पहले शादी के दबाव के खिलाफ लड़ने के लिए चर्चा की।

हमने प्रतिभागियों को कई कार्यशालाओं के माध्यम से जल्द और जबरन शादी के कारणों की जड़ समझ ने में मदद की और उन्हें कैमरे एवं फोटोग्राफी कौशल में प्रशिक्षण दिया ताकि वह अपने जीवन और चारों ओर जो देखें उस छवि को एक ईमानदार नज़र से दिखा सकें।

अपने दिल के करीब वाले **विशयों का चयन करके**, अपनी दुनिया को संवेदनशीलता से समझ के और अपनी तीव्र नज़र का उपयोग कर के इन युवा महिलाओं ने हमारे समाज में मौजूद कुछ गहरी असमानताओं का खुलासा किया है।

यह कहानियां दिखाती हैं कि स्वच्छता, शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका, भेदभाव, हिंसा और जीवन के विकल्प की बुनियादी समस्याएं अब भी हमारे समाज को कैसे पीड़ित करती हैं।

इस किताब में फोटो कहानियां और सहायक पेन ड्राइव में निम्नलिखित वास्तविक फिल्म हैं

तोड़ो बंदिशें
(दिल्ली, 2015 – जल्द और जबरन शादी पर फिल्म)

तोड़ो बंदिशें चर्चा
(दिल्ली, 2015 – तोड़ो बंदिशें का उपयोग कर सामुदायिक चर्चा और प्रचार)

नन्ही बूँदें
(दिल्ली, 2017 – जल्द और जबरन शादी का स्वास्थ्य पर प्रभाव)

आखिर क्यों
(बिहार, 2017 – 6 दूरस्थ जिलों में पहली बार कैमरे के उपयोगकर्ता पूछती हैं क्यों जबरन शादी)

Todo Bandishen is a collective campaign against early and forced marriage by girls from Level 2 of FAT's Young Women's Leadership Program.

This campaign started in 2015 with 31 girls from low-income urban communities in South Delhi. In Part II girls from Bihar and Delhi have worked together to bring real, honest stories of their lives.

The young women made photo-stories and films to spread awareness about early and forced marriage in their communities and using this media, organised screenings, door-to-door campaigns and discussions to fight the pressure of getting married before they are ready.

We helped the participants understand the root of causes early and forced marriage through multiple workshops and gave them the cameras and training in photography skills to document their lives and of those around them.

By choosing topics close to their heart, using their keen observation and a sensitive understanding of the world around them, these young women have uncovered a range of inequalities present in our society.

The stories show how very deeply the basic problems of sanitation, education, health, livelihood, discrimination, violence and choice still plague our society.

This book contains photo stories and the following in the enclosed USB drive

Todo Bandishen
(Delhi, 2015 - film on early and forced marriage)

Todo Bandishen Charcha
(Delhi, 2015 - Community discussions and campaigning using Todo Bandishen)

Nanhi Boondein
(Delhi, 2017 - Impact of early and forced marriage on health)

Aakhir Kyon
(Bihar, 2017 - First time camera users in 6 remote districts ask why forced marriage)

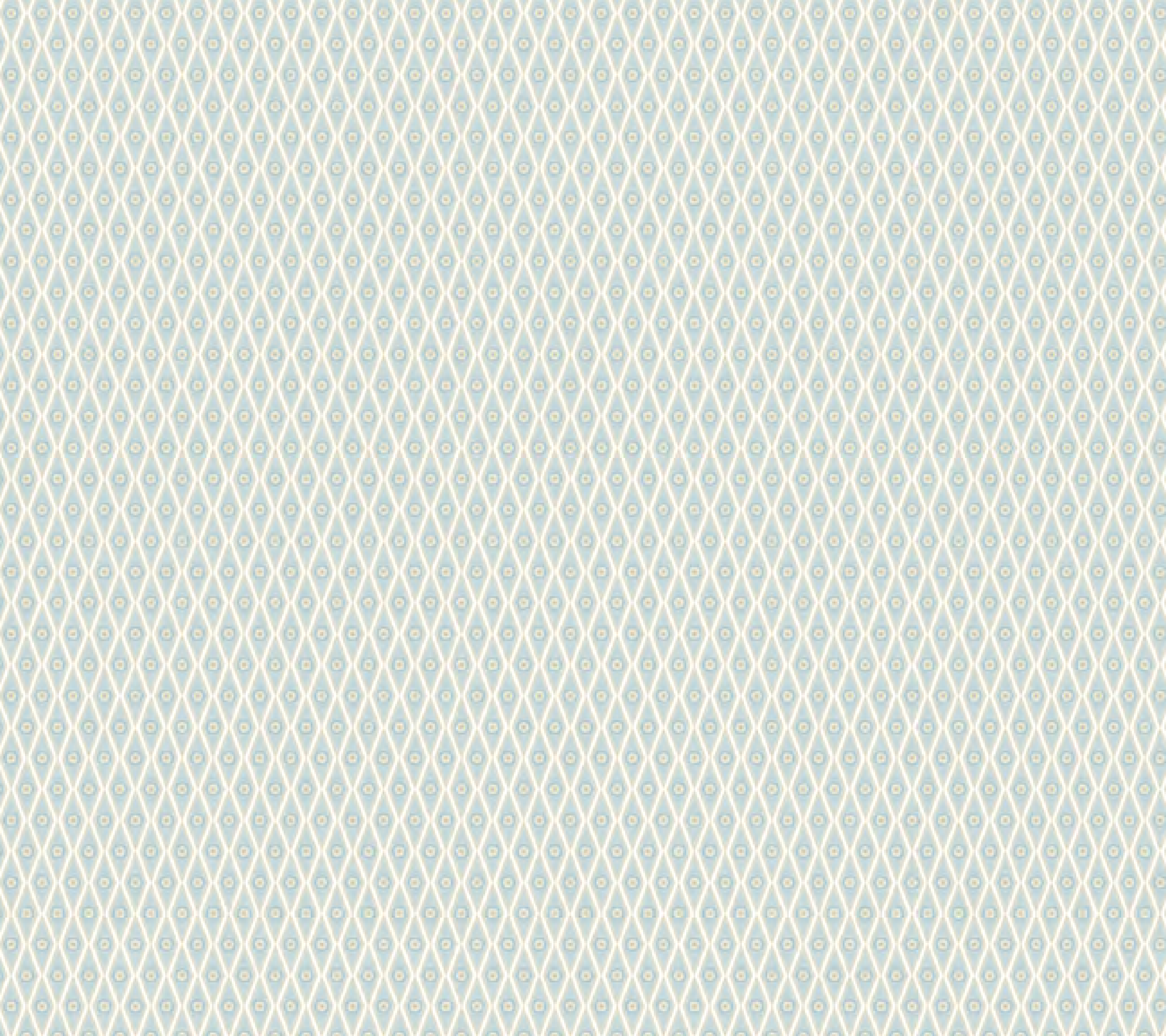

औरतों पर बंदिशें – विशय पर फोटो कहानियां

Photo stories on the theme - Women in Chains

चौतरवा गाँव, पंचायत लागुनाह। यहाँ जनसंख्या लगभग 1452 है

Chautarwa village, Panchayat Lagunah, the population here is approximately 1452

videocon

महिला नेतृत्व | A Woman Leader

अमृता | Amrita

This is Anjana Devi, she has resolved to do something for girls and women, she provides girls with study material and teaches those who do not go to school.

यह अंजना देवी हैं इनका संकल्प है की लडिकयों और महिलाओ के लिए कुछ करें। लडिकयों को पढाई की चीज़े उपलब्ध कराती हैं, जो लड़िकयां पढने नहीं जाती हैं उन्हें पढ़ाती हैं

She leads an 11-member self-help group that meets on the 15th of each month. She collects money and deposits it into a bank so they earn interest on it each month, the women discuss and lend money among the group as needed.

यह 11 सदस्य के स्वयं–सहायता समूह का नेतृत्व करती हैं जो हर महीने 15 तारीख को मिलते हैं, पैसा इक्कठा करके बैंक में जमा कराती हैं ताकि हर महीने ब्याज मिले। सभी महिलाये चर्चा करती हैं और आपस में आवश्यकता के अनुसार उधार देकर पैसे का हिसाब लेती हैं।

महिला की मज़दूरी | Labour of a woman

बिभा | Bibha

यह प्रिमला देवी हैं, जो नाई जात की हैं और प्राथमिक विद्यालय में मिड डे मील बनाती हैं

This is Pramila Devi, she is a barber by caste and makes mid-day meals at the primary school.

यह बच्चों को खाना खिलाती हैं और बतर्न धोती हैं

Feeding the children and washing the utensils is part of her job

घर जा कर घर से जुड़े काम भी करती हैं जैसे लकड़ी इक्कठा करना। फिर यह अपनी जाति के अनुसार तय काम घर–घर जा कर करती हैं। इन्हें काम के बदले घरो से अनाज मिलता है और इससे उनका घर चलता है

She does her chores at home like collecting wood and then also goes door to door to do the work assigned to her caste, in return she gets grain to feed her family

बाल मज़दूरी | Child Labour

गुड्डी | Guddi

इनका नाम जागनी कुमारी उम्र 13 साल, पूनम कुमारी उम्र 11, कविता कुमारी उम्र 9 और फूल कुमारी उम्र 7। यह लड़कियां जिला मधुबनी की रहने वाली हैं

These girls live in Madhubani district and their names are Jagni Kumari aged 13 years, Poonam Kumari who is 11 and Kavita Kumari aged 9

मैंने पढ़ाई नहीं की है
लेकिन मैं अपनी बहन
को पढाने के लिए
बाल मज़दूरी करती हूं

I have not studied
but I perform
child labour to
educate my sister

मैं जो कोदारि चला रही हूं यह काम ज्यादातर मर्द करते हैं। लेकिन मेरे पापा कहते हैं की तुम करो वरना तुमको घर से निकल देंगे और जो तुम अपनी बहन को पढ़ाती हो वो बंद करवा देंगे।

The hoe that I am using is mostly handled by men but my father says you do it or else we will throw you out of the house and your sister's education will also stop.

When we get home after working in the field and tell our parents that we want to go to our friends' house they say there is work to do at home.
Us four sisters have worked very hard to grow this crop

जब हम खेत में काम ख़त्म करके घर जाते हैं तो हम घर जाकर मम्मी पापा से कहते हैं की मुझे अपनी सहेलियों के घर जाना हैं तो वो कहते हैं कि घर पर काम करना हैं।
हम चारों बहनों ने बहुत मेहनत की यह फसल उगाने में।

सुकन्या क्लब की लड़कियों का बदलाव

Girls of Change, Sukanya Club

इश्रावती | Ishrawati

यह सुकन्या क्लब की लड़कियां हैं। यहाँ पर लड़कियां शादी के मुद्दे पर बातचीत करती हैं शादी को किस तरह से रोक पाएं, यहाँ पर क़ानूनी जानकारी मिलती है ताकि हम लड़कियां कैसे अपनी पढाई को जारी रखें हम निणर्य लेते हैं और अलग– अलग नारे लगाते हैं।

These are the Sukanya Club girls. The girls here talk about marriage, how they can delay getting married, they get legal information here on how girls can continue to study. We take decisions and shout different slogans in unison.

ये सुकन्या क्लब की लड़की है इसका नाम निपू कुमारी है, मीटिंग से आती है तो सिलाई करती है और पढ़ती भी है

This is Nipu Kumari from Sukanya Club, she goes home from the meeting, does some stitching work and she also reads.

इसका मन इस तरह काम करने का नहीं, बस पढाई करने का मन है, काम करने के लिए डांट पड़ती है इसलिए मज़बूरी में काम करती है

She does not want to work like this, her heart wants to study, she gets scolded for not working so she feels helpless and works.

बाल मज़दूरी | Child Labour

माफिया | Mafiya

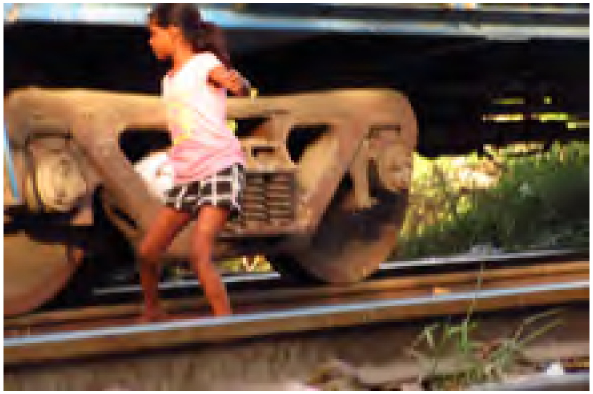

पढ़ी लिखी लड़की होने के बावजूद चलती ट्रेन में कूड़ा क्यों डाल रही है? क्योंकि उसके घर के सामने कूड़े दान नहीं हैं

Despite being educated, why is this girl putting garbage onto a moving train? Because there is no garbage can in front of her house

हमारा समाज कहता हैं की लड़कियां पढ़ कर क्या करेंगी इसिलिए लड़कियों को ज्यादातर घर में बिठा देते हैं या अपने छोटे भाई–बहन को सँभालने को बोलते हैं या शादी कर देते हैं

Our society asks why educate girls so they are kept at home and either take care of their younger siblings or are married off.

एक औरत कितनी महेनत करती हैं अगर औरत पढी–लिखी होती तो इतनी महेनत नहीं करनी पड़ती

How hard a woman has to work, is she was educated, she would not have to do so much.

A girl who should be in school is working at home because her parents have no income, there are employment opportunities in Delhi but the wages are so low that the girl has to work at home.

एक लड़की जिसे स्कूल जाना चाहिए वह घर का काम कर रही हैं क्योंकि उसके माँ–बाप के पास आमदनी नहीं है, दिल्ली मे रोजगार तो हैं लेकिन आमदनी बहुत कम हैं इसिलिए लडकी घर का काम कर रही है

मेरी ज़िन्दगी के फैसले में मेरी भूमिका | My role in my life's decision

नंदनी | Nandani

इसका नाम काजल है ये मुज़फ़्फ़रपुर जिले की है इसका बहुत पढ़ने का मन है, काजल का स्कूल में नाम लिखा है लेकिन उसकी मम्मी पढ़ने नहीं देती हैं क्योंकि काजल से घर का काम करवाती हैं।
उसका बहुत मन करता है कि वह दूसरे बच्चों की तरह खेले।

Kajal from Muzaffarpur really wants to study and is enrolled at the local school, but her mother does not let her study because she makes her work at home . In her heart, Kajal really wants to play like other children.

ये मधु कुमारी है और यह डुमरी पकरी गांव, मुज़फ़्फ़रपुर जिला की रहने वाली है, यह घर के सारे काम करती है जिसकी वजह से पढ़ नही पाती है। खाना समय पर नहीं बना तो उसकी मम्मी मारती हैं।

This is Madhu Kumari and she lives in Dumri Pakri village, Muzaffarpur district, she does all the work at home so she cannot study. If the food is not ready on time then her mother beats her.

भेदभाव और समानता | Discrimination & Equality

नेहा | Neha

What a difference between a brother and a sister in the same home, the brother is working on his laptop and the sister is washing the dishes, from morning until evening, brothers work on their laptops, they have all the time in the world but sisters work all day long and have to find time to study.

यह दोनों भाई–बहन में कितना फर्क हैं एक ही घर में भाई लेपटॉप पर काम कर रहा हैं और बहन बतर्न साफ कर रही है, भाई सुबह से शाम तक लेपटॉप चलाते हैं भाइयों के पास समय ही समय है पर बहनें दिन भर काम करती हैं फिर अपने लिए पढाई का समय निकालती हैं।

लड़का और लड़की दोनों को पढ़ने का अधिकार है समाज में इन दोनों को बराबर के अधिकार दिए लेकिन क्या लड़की को अपना हक़ समानता से मिल रहा है? क्या वह अपने सपने देख सकती है?

Both a boy and a girl have a right to education, society has given equal rights to both, but is the girl getting her right? Does she have dreams for herself?

लड़की दिन भर काम करती है फिर भी उसे कम खाना देते हैं लडके दिन भर खेलते है उन्हें ज्यादा खाना दिया जाता है यहाँ दोनों की सेहत में कितना फर्क हैं लडके की सेहत अच्छी हैं लड़की की सेहत कमज़ोर।

Girls work all day long, they still get less food, boys play all day long and are given more to eat. What a difference between the two here, the boy is healthy while the girl is weak.

यहाँ लड़की को खाना बनाने के लिए कहा गया है लड़की को घर की जिम्मेदारी दी गई है। लडके को पढाई करने को कहा है उसके ऊपर कोई जिम्मेदारी नहीं है वह अपनी ज़िन्दगी मस्ती में जी रहा है।

The girl has been asked to cook she has a responsibility in the household. The boy is asked to study, there is no work assigned to him, he is living a carefree life.

बाल विवाह | Child Marriage

प्रिया | Priya

ये मीना है, उम्र 16 साल है, इसका घर गोनपूरा पोखर में है, मीना के परिवार में कुल 6 सदस्य हैं। माता–पिता दो भाई और एक बहन हैं।

This is Mina, she is 16 years old and her home is in Gonpura Pokhar. There are 6 members in Mina's family, her parents, 2 brothers and a sister.

मीना की बहन की शादी हो चुकी है और मीना की शादी की बात चल रही थी उसको पता चला तो उसने घर पर बात की, कि मुझे शादी नहीं करनी क्योंकि मुझे पढाई करनी है लेकिन घर वालों ने बात नहीं मानी और वह घर से भाग गई, जिसकी वजह से उसके भाई ने उसको बहुत मारा, उसको वापस ला कर उसकी जबरन शादी कर दी और अब मीना उस शादी को निभा रही है।
मीना को बहुत मन है पढाई करने का लेकिन पति को अच्छा नहीं लगता की वह पढ़े, मीना का भाई बच्चों को जब पढाता है तो उन्हें बहुत ध्यान से देखती है।

Mina's sister is married and her parents were planning Mina's marriage, when she got to know about it, she tried to tell them that she wanted to study and not get married. When they did not listen to her she ran away from home, so her brother beat her black and blue, got Mina back home and got her forcibly married and now she is resigned to her fate.
Mina really wants to study but her husband does not like that she reads, when Mina's brother teaches the children, she watches them very carefully.

मीना अपने घर के काम कर रही है, उसकी माँ जो विकलांग हैं बैठ कर काम कर रही हैं।

Meena is working at home, her mother, who is disabled, is sitting and working.

मीना सोचती है की किस तरह से अपने पति से बात करूँ कि मुझे पढने की अनुमति मिले।

Meena thinks how she can talk to her husband to get the permission to study

दिल्ली में पानी | Water in Delhi

प्रिया | Priya

भारत की राजधानी दिल्ली, पानी की कमी आज लोगो की मुख्य समस्या हो गई है पहले लोगो को पानी का संकट नहीं था, आज समस्या यह है की लोगो को पानी खरीद कर पीना पड़ रहा है

India's capital Delhi, a lack of water is the biggest problem faced by people here. Earlier people did not have water problems, today the reality is that people have to buy drinking water

ज्यादातर औरतें और बच्चे पानी भरने के लिए इंतज़ार करते हैं और पानी भरकर दो–दो बड़े डब्बे ले कर ऊपर वाली मंज़िल तक ले जाते हैं जिसके कारण उनके स्वास्थ्य पर असर भी पड़ सकता है

It is mostly the women and children who wait for their turn to fill up water and they have to fill up and carry two large jars upstairs, which could affect their health.

सरकार ने 4 से 8 नल लगवाए हैं पर पानी सिर्फ 2 से 3 नलों में ही आता हैं और इतना कम आता हैं की रात हो जाती है पर लोगो का पानी नहीं भर पाता, समय भी इतना कम दे रखा है शाम के 4 बजे से रात के 8 बजे तक ही पानी आता हैं

The government has set up 4 to 8 taps but water runs in only 2 to 3 of them and the pressure is so low that it gets dark, but people are not able to fill their jars and cans. The time available is also so short, water runs from 4 in the evening until 8 at night.

पानी इतना धीरे आता है की लोग पाइप को मुंह लगा के खींचते हैं और नल के पास बहुत भीड़ हो जाती है

The water is only a trickle so people put their mouths on the tap to suck the water out and they start crowding around the taps.

पहचान क्यों बताना | What is my Identity

प्रियंका | Priyanka

लाल साड़ी, लाल सिंदूर, लाल बिंदी ओर काला मंगलसूत्र, यह बताते हैं की मेरी शादी हो गयी है।

A red sari, red vermilion, red bindi and black mangalasutra around my neck, these are signs that I am married

न मैं लाल सिंदूर लगाता हूँ, न मैं काला मंगलसूत्र पहनता हूँ न मैं लाल बिंदी लगाता हूँ। कैसे पहचानोगे की मेरी शादी हो गयी है?

मुझे देखते ही लोग बता देते हैं की मेरी शादी हो गयी है पर मेरे पति को देख कर कोई नहीं बता सकता की उसकी शादी हो गयी है, हमे क्यों यह निशानियां पहननी या लगानी पड़ती हैं?

I do not wear the red vermilion, I don't wear a black mangalasutra nor do have I a red bindi. Will you know if I am married?

People take one look at me and can tell that I am a married woman but looking at my husband nobody can tell if he is married, why do we have to wear or use these symbols?

कंचन की ज़िन्दगी | Kanchan's Life

राधा | Radha

कंचन कुमारी को न चाहते हुए भी घर का सारा काम करना पड़ता है, गाय के लिए चारा काट कर लाना।

Even though she does not want to, Kanchan Kumari has to do all the work at home like getting fodder for the cow.

खाना पकाने के लिए गोबर के उपले बनाना, फिर खाना बनाना। पैसे कमाने के लिए कंचन घर से बाहर भी काम करती है।

She makes cow-dung cakes for fuel to cook and then cooking the food. Kanchan also works outside her home to earn money.

उसे अपने काम के पूरे पैसे भी नहीं मिलते हैं, अपनी पढाई के लिए पैसे निकालने के लिए सिलाई का काम भी करती है।

She does not get paid a full wage and is forced to do sewing work to pay for her education.

जाति के प्रति भेदभाव | Discrimination on the Basis of Caste

रिंकु | Rinku

यह बक्सर जिले के मनोहर पुर गावं का मिडिल स्कूल है।

This is the middle school in Manoharpur village, Buxar district.

यह ललिता देवी हैं, उम्र 45 साल और ग्राम मनोहर पुर थाना इतरही, जिला बक्सर, बिहार से हैं, 2008 से इस स्कूल में खाना बनाने का काम करती हैं।

Lalita Devi, 45 is from village Manoharpur, Police Station Itarahi, District Buxar in Bihar, she has been working in this school since 2008.

यहाँ पर अलग–अलग जाति की तीन महिलाएं काम करती हैं और क्योंकि ललिता देवी चमार जाति की हैं, इनके साथ भेदभाव होता है। इनको गोबर के उपले ढोना, बतर्न धोना, झाड़ू लगाना, जैसा काम दिया जाता है लेकिन रसोई घर में बना हुआ खाना नहीं छूना और स्वयं निकल कर ना तो बच्चों को दे पाती हैं, ना ही खुद खाती हैं। अपनी जीविका चलाने के लिए काम करती हैं और जाति के भेदभाव को आर्थिक स्थित ठीक न होने के कारण यह आवाज़ नहीं उठा पाती हैं, इनके मन में डर हैं कि कहीं मैंने किसी से शिकायत कर दी तो मेरी नोकरी चली जाएगी।

Three women of different castes are employed here and since Lalita Devi is chamar by caste, she has to silently suffer discrimination. She is made to do work like preparing cowdung cakes for fuel, washing the dishes and sweeping the floor but is not allowed to touch the cooked food. She can neither go out to feed the children nor can she eat the food herself. She works to support her family and due to her poor financial conditions, is unable to voice her protest against this caste discrimination. She is scared that if she complains, she will lose her source of livelihood.

टीबी की बीमारी | Suffering from tuberculosis

रूबी | Ruby

इसका नाम अंजली है यह डुमरी पकरी गांव, जिला मुज़फ्फरपुर की रहने वाली है। इसकी उम्र 16 साल की है।

Anjali belongs to Dumri Pakri village, district Muzaffarpur and she is 16 years old.

Since Anjali is very poor and her father is no more, her mother has to manage alone. Working in other's homes, Anjali's mother earns to runs the household and takes care of her daughter.

यह बहुत गरीब है, इसके पापा नहीं हैं तो मम्मी को सब कुछ करना पड़ता है। मम्मी दूसरों के घर में काम करती हैं और उससे अपना घर चलाती हैं इसकी मम्मी इसका घ्यान रखती हैं।

अंजली को एक साल से टीबी की बीमारी है यह बहुत सारी दवाई खाती है। यह लोगों से दूर रहती है क्योंकि इसको लगता है कि इसकी बिमारी किसी औऱ को न हो जाये। इसके बहन–भाई भी इसके साथ खाना नहीं खाते हैं।

For an year Anjali has suffered from tuberculosis and she has to eat a lot of medicines. She stays away from people because she feels that she will infect others with the disease. Even her brothers and sisters do not eat food with her.

बाल मज़दूरी | Child Labour

सुष्मिता | Sushmita

प्रखंड बगाह 1, पंचायत लागुनाह के अंतगर्त बहुरवा टोला, इस टोले में लड़कियां बाल मज़दूरी (और बेरोजगारी भी है इसिलिए आर्थिक स्थिति बहुत दयनीय है) का शिकार हैं।

Block Bagah 1, Panchayat Lagunah in Bahurva village, girls here suffer under child labor and there is unemployment, so the economic condition is pitiful.

पूनम 12 साल की हैं, बहुत गरीब हैं और बाल मजंदूरी करती है, इनके पिता महेंद्र कोई काम नहीं करतें हैं, नशे के शिकार हैं, माता बियाफी देवी मज़दूरी करती हैं।

Poonam is 12 years old, she is very poor and a child labourer. Her father Mahendra does not work as he has a drug habit, her mother Bafiya Devi works as a manual labourer.

पूनम के 3 बहन, 2 भाई हैं और वह अपने भाई–बहन को संभालती है, इसका बड़ा भाई दूसरे राज्य में काम करता है।
पूनम को घर का सारा काम करना पड़ता है और जल्दी खाना बनाकर अपनी बहन को खिला कर वो 8 बजे तक मज़दूरी करने चली जाती है।

Poonam has three sisters and two brothers and she takes care of her siblings, her elder brother works, in another state.
Poonam has to do all the household work, she quickly makes the food and after feeding her sister, leaves for work by 8 am.

अपने घर से लगभग 2 किलोमीटर दूर अपनी सहेलियों के साथ मज़दूरी करने जाती हैं, वहां देरी से पहुचने पर मालिक डंडा लेकर खड़ा रहता हैं और कभी–कभी तो डांट पड़ जाती हैं। खेत में अपने साथियों के साथ काम करती हैं, धीरे काम करने या बीच में काम रोकने पर बहुत डांट पड़ती हैं और कभी कभी मालिक हाथ भी उठा देता हैं, इतना काम करने के बाद भी उनको लडको की अपेक्षा से कम मज़दूरी मिलती हैं

She goes to work with her friends about two km away from home, if she is late, the landowner is waiting with a stick in hand and they get an earful.
While Poonam and her coworkers work in the fields, if they slow down or take a break, the owner is ready with sharp words and sometimes, he hits them. After doing so much work, she is paid lesser than the boys.

उसकी इच्छा है मैं पढ़ना चाहती हूँ, खेत में काम करना अच्छा नही लगता है, मैं भी दूसरे बच्चों की तरह स्कूल या घूमना–फिरना पसंद करती हूँ लेकिन मेरे घर में आर्थिक स्थिति के कारण और अपने पिता की सोच के कारण मैं ऐसा नहीं कर पाती हूँ

She wishes to be able to read, she does not like working in the fields, she also wants to be free like other kids but due to the financial condition at home and the attitude of her father she is unable to do what she wants.

औरतें और शिक्षा | Women and Education

सुम्मी | Summi

हमारे देश में लड़कियों को पढ़ाई से वंचित रखा जाता है, उन्हें पढ़ाई के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाता, उनको लड़कों के जैसी मान्यता नहीं दी जाती, कई बार लड़कियाँ आर्थिक परेशानियों के वजह से नहीं पढ़ पाती। जब लड़कियाँ शिक्षा से पिछड़ जाती हैं, शादी के बाद बहुत कम को पढ़ने का मौका मिलता है। औरतें अपने घर के काम के साथ पढ़ाई भी करती हैं, पढ़ाई करने से उनके अंदर आशा की किरण जागरूक होती हैं, वह भी अपने आपको पढे लिखे लोगों के बराबर देखती हैं।

Girls in our country are deprived of an education, they are not encouraged to study, they are not given as much importance as boys. Many a time, girls miss out on an education due to financial problems. If girls get behind on their education, very few get a chance to study after marriage, they have to manage the work at home with their education. When a women can read, a ray of hope awakens in her, she considers ther-self equal to an educated person.

वह किसी और पर निर्भर होना छोड़ देती हैं और अपने बच्चों को पढ़ा सकती हैं, ताकि वह बचपन मे शिक्षा से वंचित न रहे, अपने पैरों पर खड़े हो सकें, पढ़ लिखकर कुछ बन सकें, दूसरों पर निर्भर ना रहें।
उसके बाद खुशी, चमक, आशा, हिम्मत।

She does not rely on anyone else and can also teach her children so they are not deprived of an education and can take care of themselves, become something and not depend on others. Then, happiness, radiance, hope, courage.

ज़िन्दगी में मौके | Opportunities in life

उमा | Uma

This house is deep inside the city of Delhi, a family lives here. A husband and wife and their six daughters and two sons lived here. The parents gave all their children a chance at education, but all of them could not go far, just one girl gave all the importance to her studies and that girl is me.

यह घर दिल्ली शहर के बीचों–बीच है इस में एक परिवार रहता है जिसमे एक पति–पत्नी और उन के 6 बेटियाँ और 2 बेटे रहते थे। माँ बाप ने सभी को पढ़ने का मौका दिया मगर सभी बच्चे पढ़ाई मे आगे नही बढ़ पाये, एक लड़की ने अपनी पढ़ाई को ज्यादा महत्व दिया, वो मैं हूँ।

मैंने अपने बचपन से ही स्कूल की पढ़ाई और अन्य गितिविधयो मे भाग लिया और पढ़ाई के अलावा कई चीजें सीखी जेसे नृत्य, चित्र, खेल आदि और सीखकर मैंने सफलता हासिल की इन्हीं कारणों से मेरा परिवार और विधालय के आध्यापक मुझ पर गर्व करते हैं।
मैं सीखना चाहती हूँ क्यूंकि मुझे सीखना पसंद हैं और मैं आत्मनिभर्र बनना चाहती हूँ।

Ever since my childhood, I have been active at school and also taken an active part in extra curricular activities, I learnt things like dance, painting, sports and the like. After learning these skills, I have distinguished myself and these are the reasons my family and my teachers take pride in me.
I want to learn because I like learning to and I want to be self-reliant.

उन्होंने मेरी पढ़ाई मे बहुत पैसे लगाए और सहयोग किया उन्होंने कभी यह नही सोचा की मैं एक लड़की हूँ तो मुझे कम पढ़ाना चाहिए और मेरे भाई को ज्यादा, उन्होने मुझे घर के काम करने और सीखने के लिए कभी दबाव नही डाला।
वे मेरी पढ़ाई को ज्यादा महत्व देते है इसी कारण वे घर के काम खुद कर लेते है और वे मुझ से उम्मीद करते है की मैं अपने करियार मे आगे बढ़ूँ।

My parents have spent a lot of money to educate me and have given me all the support, they never have never thought that I am a girl, so I should be taught less and my brother more, nor did they ever put pressure on me to do any work at home or even learn it.
They give so much importance to my studies that they do all the work at home and they have high hopes that I will succeed in my career.

बाल मज़दूरी | Child Labor

वंदना | Vandana

इनका नाम लीलावती ओर चाँदनी है, यह बगहा जिला, पंचायत चम्पारण से हैं और यह 15 साल की हैं। चांदनी सुबह जल्दी उठ कर घर का सारा काम करके खेत में काम करने जाती है।
लीलावती सुबह सबका खाना बनाती है फिर उन्हें खिला कर बाहर काम करने जाती है।

This is Lilawati and Chandni, from Bagaha district, panchayat Champaran and they are 15 years old. Chandni is up early in the morning and after finishing all the work at home, she goes to work in the fields. Lilavati cooks food for everyone in the morning and then goes out to work.

दोनो बहन जाते समय एक दूसरे से बात करती हैं कि भले हम पढ़े–लिखे नहीं हैं मगर काम करेंगी ओर पैसे कमाएंगी ओर सिलाई–कढाई करेंगी।

The two sisters talk to each other while walking to work, so what if we are not educated we will work and earn money and we will sew and embroider.

खेतों में काम करने जाती हैं तो इन दोनों को 120 रूपए मिलते हैं और ये पैसे इक्कट्ठा करती हैं और उसी से सिलाई के लिए सामान की खरीदारी भी करती हैं।

After working in the fields they get wages of 120 rupees and they save this money to buy material for sewing.

यह गाय के लिए चारा लाती हैं, खिलाती हैं ओर घर का बाकी काम करती हैं।

They bring fodder for the cow, feed it and then finish the rest of the house-hold work.

बाल मजदूरी करके आती है तो दोपहर में बैठ कर अपनी सिलाई–कढाई करती है।

They come back home from work and in the afternoon do their sewing and embroidery.

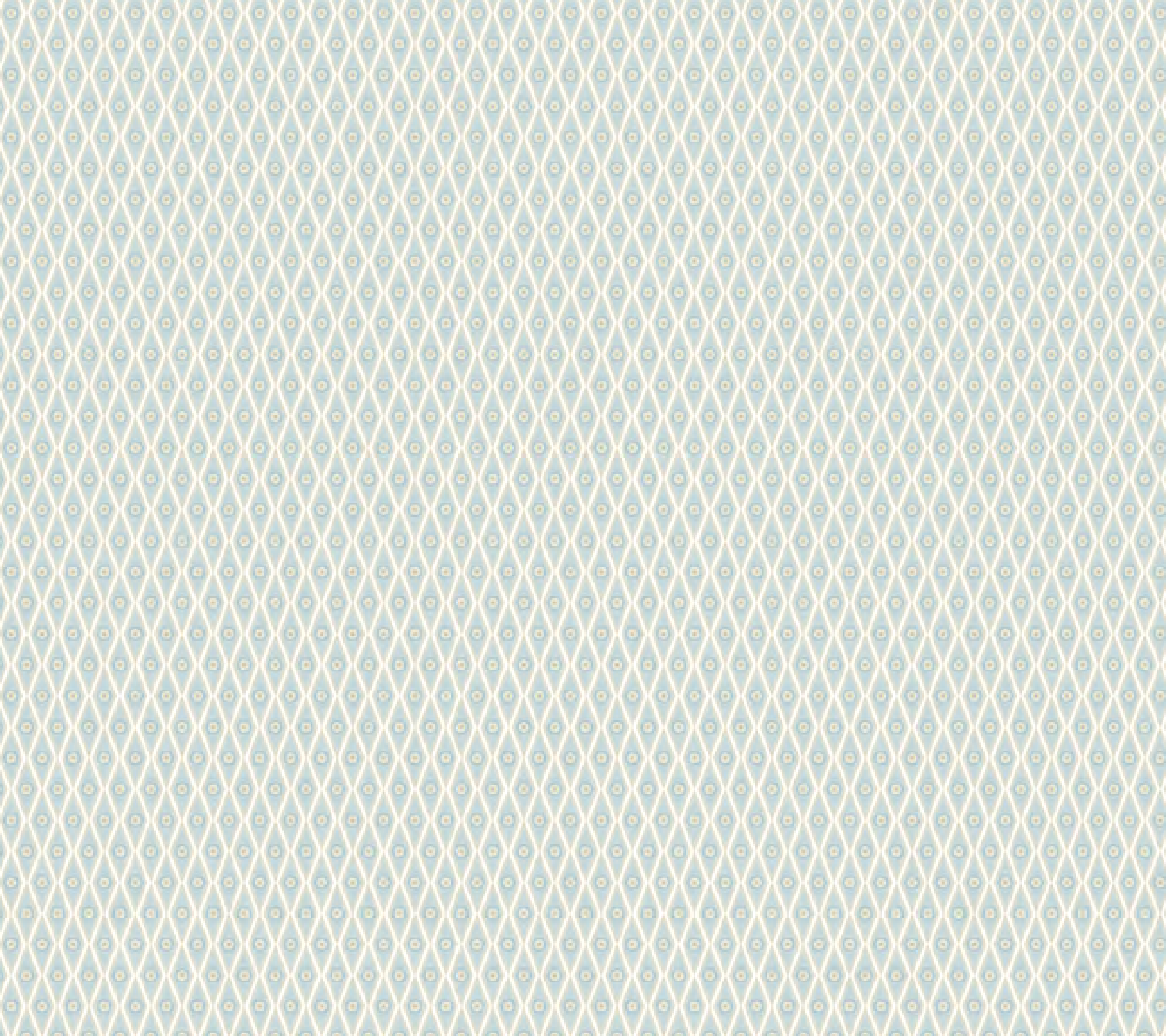

अभियान पर काम करने वाली गर्ल पावर नेताओं की पहचान

A little about the Girl Power Leaders who worked on the campaign

अमृता

Amrita

मेरा नाम अमृता है मैं अभी 11वी कक्षा में पढ़ रही हूँ और समग्र शिक्षा एवं विकास संस्थान के किशोरी मंच से जुडी हूँ जहाँ हम किशोरी–किशोर के मुद्दे पर काम करते हैं। मैं अपनी संस्था के सहयोग से फैट संस्था से जुडी और वर्कशॉप में आई थी। पटना आने में थोड़ा डर लग रहा था क्योकि मैं पहले कभी घर से अकेली नहीं गई थी और मुझे जानकारी नहीं थी कि क्यों आई हूँ और कैमरा सीख कर क्या करूंगी। मैंने पहली बार कैमरा देखा और चलाया और अपने आप को जानने का मौका मिला की मुझे क्या पसंद है और मैं क्या चाहती हूँ। मैंने घर जाने के बाद धीरे धीरे अपनी इच्छा को अपने घर वालों को बताया की मैं फुटबॉल खेलना चाहती हूँ और आज मैं फुटबाल खेलती हूँ। वर्कशॉप में सब को अपनी बातें सब के साथ रखते देखा तो मेरे अंदर भी काफी हिम्मत आई है और मैंने अपने डर को निकाला है। मैं घर में थोड़ी–थोड़ी चीज़े करने लगी हूँ जिसमे हम अपने पापा या भाई पर निभर्र थे, जैसे मैंने गैस का बल्ब भी जलाया है जो की अब तक सिर्फ पापा ही जलाते थे। अब मै पढ़ रही हूँ फुटबॉल भी खेलती हूँ बाइक भी सीखी है और खुल कर बात भी कर पाती हूँ।

My name is Amrita. I study in 11th standard and I am a part of the Kishori Manch of the Samagra Shiksha and Vikas Sansthan where we work with teenagers. Through my organisation I attended a workshop organised by FAT In Patna. When I came to Patna I was feeling a bit scared because I had never been away from home alone, I did not know why I was there and what I would do after learning to use a camera. It was the first time I saw a camera and I used it and got an opportunity to understand what I like and what I want. After going home, I slowly told my family that I wish to play football and today I play football. After seeing everyone talking in front of each other freely during the workshop, I have become bolder and have fought my fears. I have started doing little things at home which only my father or brother would do like changing the filament of the gas lantern. Now I play football, I have learned to ride a bike and I speak my mind.

बिभा

Bibha

मेरा नाम विभा है। मैंने मास्टर की पढ़ाई पूरी कर ली है। मैं पटना जिले के एक गाँव में रहती हूँ मेरे पापा मुझे बहुत सहयोग करते है मुझे जब फ़ोटोग्राफ़ी वर्क–शॉप के लिए भी आना था तो उन्होंने ही मदद की थी पर मेरा भाई पहले मुझे घर से बाहर नहीं निकलता देखना चाहता था उसने काफी रोकने की कोशिश भी की लेकिन मैं किसी तरह से इस वर्कशॉप में आई। मैं अपनी शारीरिक स्थिति के कारण जिंदगी खुल कर नहीं जी रही थी और न ही इस बारे में कभी किसी से बात की। पर इस वर्कशॉप के दौरान मुझे खुद को समझने का मौका मिला की मेरी इस स्थिति की वजह से मुझे नहीं रुकना है और अपने अंदर हीनता की भावना नहीं लानी है अब मै इस बारे में बात करने में हिचिकचाती नहीं हूँ। मैं गौरव ग्रामीण महिला विकास मंच संस्था की ओर से इस वर्कशॉप में गई थी आज मेरी संस्था मुझे अपने कामों में भी शामिल करने लगी है। मैंने इतनी समझ बनाई है की आज घर पर बातचीत करती हूँ और मेरा भाई मुझे अब सहयोग देने लगा है।

My name is Vibha, I have completed my master's degree and I live in a village in Patna district. My father supports me a lot, when I wanted to come for the photography workshop, he was the one who helped, my brother tried a lot to stop me but somehow I came to this workshop. Due to my physical condition I hesitated to go out and I had never spoken to anyone about this, but during the workshop I got an opportunity to understand that I do not have to hesitate because of my situation. I have been able to lose the feeling of inferiority within myself and now I do not hesitant to talk about it. I went to this workshop on behalf of the Gaurav Grameen Mahila Vikas Manch and now I am an active member in my organisation. I have started to understand so much that I speak up at home today and my brother has started supporting me now.

गुड्डी

Guddi

मेरा नाम गुड्डी है और मैं 16 साल की हूँ मैंने पहली बार फोटो लेना सीखा। मुझे कैमरा चलाना बहुत अच्छा लगता है। मैं फोटोग्राफर बनना चाहती हूँ। पहले अपने घर में पैसे की कमी के कारण शहर में किसी के घर में काम करती थी और पढ़ाई छोड़ दी थी। फिर मैं घर वापस आ गई और मम्मी से कहाँ की मुझे पढ़ाई करनी है और ये मेरा हक़ है। अपने अधिकार और हक़ के बारे में समझ मुझे पटना में कायर्शाला के दौरान मिली। अब मैं आगे बढ़ने के लिए अपनी बात अपने घर में रखती हूँ।

My name is Guddi I am 16 years old and I have learned to take photographs for the first time. I like taking pictures and I want to be a photographer. Earlier due to a lack of money at home, I used to work in someone's house in the city and I was not going to school. I came back home and told my mother that I want to be educated and that is my right. I learnt about my rights and how I could ask for them during the FAT workshop in Patna. Now I speak up at home and move ahead in life.

इश्रावती

Ishrawati

मेरा नाम ईशरवाती है मैं पश्चिमी चंपारण के टरविलयाँ गांव से हूँ। और मैं एक किसान हूँ पापा के साथ खेत में काम करती हूँ। पहले मैं पढ़ती थी 8वी कक्षा तक पढ़ी लेकिन पापा ने पढ़ाई छुड़वा दी अब नहीं पढ़ती हूँ । मैं इज़ाद संस्था के सुकन्या क्लब से जुड़ी हुई हूँ जहाँ हम बहुत सारी चीज़े सीखते है। मैं अनजान लोगो के सामने ज्यादा नहीं बोलती हूँ लेंकिन जब मैं पटना में फैट की कायर्शाला में आई तो शुरू में नहीं बोल पा रही थी लोगो से कैसे बात करूँ मुझे नहीं आता था और लगता था की मेरी भाषा (भोजपुरी) कोई नहीं समझ पाएगा। लेकिन वहाँ जितनी भी लड़िकयाँ थी और हमें सिखाने वाले थे उन्होने काफी मदद करी ताकि मैं सबके सामने खुल के बात करूँ। मैंने अपनी पढ़ाई के लिए बहुत परेशानी भी उठा रही हूँ लेंकिन बहुत हिम्मत मिली है मुझे और मैं अपने घर में बार–बार बोल पा रही हूँ और यह लड़ाई अभी भी जारी है। अपनी पढ़ाई को लेकर रास्ते निकल रही हूँ और मेरा हौसला कम नहीं हुआ है। मैं किशोरी मंच में भी बातचीत करती हूँ की मैंने क्या क्या सीखा।

My name is Ishravati I am from Tarvalia village, Champaran West, I am a farmer and I work with my father in the fields. I have studied up to 8th grade, but my father made me drop out of school. I go to the Sukanya Club of IZAD where we learn a lot of things. I never used to speak in front of strangers, when I came to the FAT workshop in Patna, I did not know what to speak about in the beginning and felt that no one would understand my Bhojpuri. But I found that all the girls and our trainers supported me so that I could speak freely with everyone. I am working hard to try to get educated and I have got the courage to be able to to speak about this at home repeatedly and this fight is still on. I am trying to find a way to start school and I have not given up hope yet. I also share what I have learnt with other girls at the forum for teenage girls.

माफिया

Mafiya

मेरा नाम माफिया है, मैं 20 साल की हूँ और मैंने ग्यारहवी कक्षा पास की है। मैं जल विहार, दिल्ली में अपने पिरवार के साथ रहती हूँ लेकिन मुझे अपने घर में अपनी खुशी नहीं दिखती थी और मैं किसी से ज्यादा बात नहीं करती थी। जब मैं 2016 में फैट आई, तब मुझे पता चला की मेरी खुशी क्या है और मैं क्या चाहती हूँ। मैंने फैट से अपने अधिकार जाने और मुझे यह जानकारी मिली की यह अधिकार क्यों मांगे जाते हैं। यह जानकर मेरे अंदर बहुत हिम्मत आई है और अब मैं अपनी परेशानियों का हल निकाल पाती हूँ और सबकी मदद करती हूँ, अपने पिरवार की भी। इस दौरान मुझे अपनी पसंद पता चली कि मुझे अलग–अलग जगह घूमना पसंद है और पढ़ना भी और साथ ही फोटोग्राफी पसंद है क्योंकि जब मैं कैमरा सीख रही थी मैंने पहली बार कैमरा हाथ में लिया था। कैमरा हाथ में लेकर मुझे बहुत खुशी हो रही थी फिर मैंने उसी कैमरे से फोटो लेना शुरू किया तो सबने कहा कि मैं बहुत अच्छी फोटो खींचती हूँ,
जब फैट में लड़कियों के अधिकारों के लिए फिल्म बनाई गई उस फिल्म में मैं जुडी, मैंने एक सीन भी शूट किया, अब मैंने अपना सपना फोटोग्राफी चुना है।

My name is Mafiya, I am 20 and I have studied upto 11th standard. I live with my family in Jal Vihar, Delhi, but I was not happy at home and never spoke much with anyone. Only when I joined FAT in 2016 did I realise what I wanted and what made me happy.
Through FAT I learnt about my rights and got to know why we have to fight for them. This knowledge has given me a lot of courage and now I can solve my own problems and help everyone, even my family.
In this time I got to know that I like to travel to new places and want to study and take photographs. When I was learning about photography, I held a camera in my hand for the first time. I felt very happy with the camera and when I started taking photos, everyone praised my images. I took an active part in making a film on girls' rights at FAT, filmed a scene for it and now I have chosen photography as what I want to do.

नंदनी

Nandani

मेरा नाम नंदनी है और मैं मुज़फ़्फ़रपुर जिले के एक गाँव में रहती हूँ। मैं जिस घर से हूँ वहाँ से मुझे बाहर निकले नहीं देते हैं लेकिन किसी तरह से निदेर्श संस्था ने बात की ताकि मैं बाहर निकल सकूँ। जब मैं फैट की कायर्शाला से जुड़ी मैंने वहाँ कैमरा कैसे चलाते हैं और फोटो कैसे खींचते हैं यह सीखा। मेरे घरवाले मेरी पढाई को सहयोग नही दे रहें थे लेंकिन किसी तरह से मैंने दसवीं कक्षा पास करी। इस कायर्शाला के बाद मैं घर जाती थी और घर वालो को बताती थी की मैंने क्या सीखा, जिसके कारण वह धीरे–धीरे मुझे थोडा–थोडा समझने लगे की मैं भी कुछ कर सकती हूँ। मेरा भाई जो मुझे सहयोग नहीं देता और नहीं चाहता था की मैं पटना जाऊ धीरे–धीरे वह भी समझने लगा और आखरी कायर्शाला में वह खुद ही मुझे छोड़ने आया था जिससे मुझे बहुत खुश हुई। आज घर वाले कुछ नहीं बोलते हैं कहीं आने जाने को लेकर। मैं तकनीकी सीखने के बाद घर पर उसे इस्तेमाल करने की कोशिश करी मैंने ख़राब फ़ोन को भी ठीक किया।

My name is Nandani and I live in a village in Muzaffarpur district. I am not allowed out of my house, but people from Nirdesh spoke with my family so I was allowed to step out. When I joined FAT's workshop I learned how to operate a camera and how to take photographs. My family members did not help with my studies but somehow I passed 10th grade. After this workshop, when I went home I used to tell people what I learned and gradually they started to understand a little bit that I too could do something. My brother never supported me and did not want me to go to Patna, gradually he has begun to understand and he came to drop me to the last workshop, which made me very happy. At home, no one questions me on where and when I go. I have used the technical skills I learnt at home and even fixed a broken phone.

प्रिया

Priya

मेरा नाम प्रिया है मैं पटना जिले के गोंपुरा गाँव में रहती हूँ और अभी ग्रेजुएशन के दूसरे साल में हूँ। मैंने गौरव ग्रामीण महिला मंच संस्था से जुड़ने के बाद काफी ट्रेंनिंग के दौरान बहुत कुछ सीखा और संस्था के द्वारा फैट की कायर्शाला में जुड़ने का मौका मिला जिसके बाद मेरी जिंदगी में काफी बदलाव आए है। पहले मुझे लगता था की लड़िकयों को अच्छा बन कर रहना चाहिए पर अब मुझे लगता है की मैं जैसी भी हूँ अच्छी हूँ। पहले अलग–अलग जाती के लोगो से भेदभाव भी करती थी पर अब सब को एक समान मानती हूँ और अपनी समझ से खुद के निणर्य भी लेती हूँ।

My name is Priya, I live in Gonpura village, Patna district and I am in the second year of college. I joined the Gaurav Grameen Mahila Vikas Manch, learned a lot through training sessions and got an opportunity to join the FAT workshop after which there have been many changes in my life. Earlier I thought that girls should behave a certain way, but now I want to be myself. I used to discriminate between people of different castes but now I consider everyone equal and take my own decisions based on my understanding.

प्रियंका

Priyanka

मेरा नाम प्रियंका है, मैं 20 साल की हूँ और मैंने अभी ग्रेजुएशन खत्म किया है। फैट में मैं तीन साल पहले एक प्रतिभागी की तरह जुडी थी और अभी मैं एक नारीवादी नजिरये के साथ आगे चलकर काम करना चाहती हूँ। मेरे बहुत सारे सपने हैं और मुझे अपनी जिन्दगी में बहुत कुछ करना है लेंकिन मेरा एक खास सपना यह है की मैं पूरी दुनिया घूमना चाहती हूँ। पहले मुझे घूमना और लोगों से मिलना पसंद नहीं था क्योंकि मुझे डर लगता था और यह मेरी पसंद नहीं थी, मैं कभी घर से बहार निकलती ही नहीं थी। लेंकिन मेरे ऊपर हमेशा घरवालों से एक दबाव था, काम करो और घर में पैसे दो। जब मैंने धीरे–धीरे घर से बाहर निकलना शुरू किया तो मेरा डर निकलता गया और आत्मिवश्वास बढ़ता गया। मैं हमेशा सोचती थी की मैं अपने बारे में सब जानती हूँ, लेंकिन जब कोई मेरी पसंद पूछता तो मैं कभी कुछ नहीं बोल पाती। जब मैंने इन सवालों का जवाब ढूंढा तो पता चला की मुझे वही चीजें पसंद हैं जो मेरे पिरवार को पसंद हैं उन्हें मैंने अपनी पसंद बना लिया था। फैट के द्वारा दी गयी मुद्दों पर कायर्शाला ने खुद को जानने और समझने में मेरी बहुत मदद की तभी मैं आज अपने लिए कुछ फैसले कर पाई हूँ और कर रही हूँ। इसी दौरान मैंने 3 महीने राजस्थान के एक गाँव में काम किया, यह अनुभव बहुत अच्छा था और अब मैं अपनी जिंदगी में सिर्फ आगे और आगे बढ़ना चाहती हूँ।

My name is Priyanka. I am 20 year old and I have just completed my graduation. I joined FAT three years ago as a participant and now I want to move ahead and work with a feminist's perspective. I have many dreams and I aim to achieve a lot in life, but my most special dream is to travel the world. Earlier, I did not like going anywhere or meeting people as I was afraid and this was not my choice, I just never went outside. But, I always had this pressure from my family to work and earn money for the household. When I slowly started venturing outside my home, my confidence increased and my fear evaporated.

I always thought that I knew everything about myself, but when people asked me what I liked, I had no answer. When I looked for answers to these questions, I realised that I liked what my family liked and I had made their choices my own. The workshop on social issues at FAT helped me a lot to know and understand myself, which is why I have been able to take decisions for myself and continue to do so.

During this period I had a wonderful experience of working in a village in Rajasthan for 3 months and now I just want to move forward in my life.

राधा

Radha

मेरा नाम राधा है और मैं मधुबनी ज़िले के एक छोटे से गाँव से हूँ। मैं बिहार सेवा सिमित संस्था से जुड़ी हुई हूँ और इस संस्था के जरिये मैं फैट की कायर्शाला में आई। मुझे पहले इस कायर्शाला के बारे में नहीं पता था लेकिन पापा—मम्मी ने बोला वहाँ जाकर तो देखो। जब मैं पहली बार आई तो सब अनजान थे मैं किसी से बात नहीं कर रही थी कुछ समझ नहीं आ रहा था की किस से क्या बात करूँ मगर धीरे धीरे समय बीता तो बाकी लड़िकयों से बातचीत करने लगी। बातचीत के दौरान अपनी रोज़ की आदतों को अपनी खुशी और पसंद की तरह बता रही थी लेकिन जब बहुत सारी बातें की गई तो मुझे पता चला की असल में मेरे पास विकल्प न होने के कारण वह तो मेरी आदत बनी और मुझे लगने लगा की मुझे यही पसंद है। अपनी दिक्क़तों को भी बताया और समझा की क्यों यह मेरे साथ होता है। मैं कभी जींस नहीं पहनती हूँ क्योंकि घरवाले नहीं चाहते मगर मैं जब घर गई तो अपनी पसंद को बताया और कपडे भी ख़रीदे। मेरे पापा—मम्मी बहुत खुश हैं और मुझे फ़ोन भी दिया है।

My name is Radha and I am from a small village in Madhubani district. I am associated with the Bihar Seva Samiti and through them, I came for FAT's workshop. I did not know about this workshop, but my parents told me, go there and see. When I reached Patna, everyone was a stranger, I did not speak to anyone, I did not know what to talk about and to whom, but as time passed, I slowly started talking to the other girls. I thought what I did everyday was my choice and my happiness, but when I spoke and heard others, I realised that in reality I did not have any choice and so I started feeling that I liked what I had to do. I shared my problems and understood what is happening with me. I did not wear jeans because my parents do not want me to, but when I went home I told my parents what I wanted and bought new clothes for myself. My parents are very happy and have also given me a mobile phone.

रिंकु

Rinku

मेरा नाम रिंकू है मैं कक्षा 12 में पढ़ती हूँ। मैं बिहार के बक्सर जिले के एक गाँव में रहती हूँ और मदद संस्था के साथ जुड़ी हूँ। मेरी पढ़ाई 8वी के बाद छुड़वा दी गई। फिर 3 साल के बाद वापस शुरू की गई क्योंकि शादी के लिए कम से कम मेंट्रिक पास लड़की की मांग हो रही थी। मेरी पढ़ाई शुरू करने के लिए भी मेरी मर्ज़ी नहीं पूछी गई। पहले मै खुद भी अपनी इच्छा को महत्व नहीं देती थी। मुझे लगता था की घरवाले जो भी कर रहे हैं मेरे भले के लिए ही कर रहे हैं लेकिन फैट की कायर्शाला के बाद मुझमे थोड़ी समझ बनी और मैं समझती हूँ की लड़िकयों की भी इच्छा का महत्व होना चाहिए। मैंने अपने पापा से बातचीत करके अपनी शादी को रोका हुआ है।

My name is Rinku I study in class 12th, I live in a village in Buxar district of Bihar and I am a part of MADAD. (Society for Mobilization of Action for Dalit Advocacy and Development) My parents made me drop out of school after 8th standard and 3 years later put me back into school because when they tried to get me married everyone demanded a girl educated till the 10th standard. I had no choice in the decision to leave and I was not consulted before I was asked to join school again. At first I did not give any importance to my choices, I thought my family decides what is best for me, but after the FAT workshop, I have a better understanding of this issue and I believe girls should have a say in their lives. I have spoken to my father and resisted the pressure of marriage.

रूबी

Ruby

मेरा नाम रूबी है मैं मुज़फ्फपुर जिले के पकड़ी गाँव की रहने वाली हूँ और निदेर्श संस्था से जुडी हूँ। मेरी दीदी इस संस्था में काम करती हैं और क्योकि मेरे मम्मी–पापा मेरी पढाई के लिए कोई सहयोग नहीं देते है दीदी ही मुझे आगे बढ़ने के लिए सहयोग देती हैं। मैं निदेर्श संस्था के सहयोग से फैट की कायर्शाला में गई इससे पहले मैं कहीं नहीं जाती थी क्योकि मम्मी और पापा जाने ही नहीं देते थे। मेरी दीदी घरवालो की एक नही सुनती और वह मुझे लेकर जाती थी। मुझे इस कायर्शाला से यह समझ बनी की समाज में क्या होता आ रहा है और लड़का और लड़की के बीच अंतर जिसे मैं नहीं समझ पाती थी अब समझने लगी हूँ और लोगो से इस बारे में बात भी कर पाती हूँ।

My name is Ruby, I live in Pakdi village, Muzaffarpur district and I am associated with Nirdesh. My sister works with Nirdesh and though my parents have never encouraged me to be educated, my sister supports me to move forward. I went to the FAT workshop through Nirdesh, before that I never left my home because my parents did not let me go out. My sister did not listen to my parents and she used to take me. After this workshop I understand what is happening in our society and the difference between a boy and a girl which I did not know earlier. I have started to talk to people about this.

सुष्मिता

Sushmita

मेरा नाम सुष्मिता है मैं पार्ट 1 में पढ़ रही हूँ। अपनी पढ़ाई के खर्च के लिए पढ़ाती भी हूँ और साथ ही मैं समग्र शिक्षा एवं विकास संस्थान के किशोरी क्लब की अध्यक्ष भी हूँ। उस क्लब में हम किशोरी–किशोर के मुद्दे पर बातचीत और काम करते हैं। मैं जब वर्क–शॉप में आई थी जहाँ बाकी लड़कियों से उनके साथ हुई हिंसा और भेद–भाव की बातें सुनती थी तो मैं यह बताती थी की मेरे घर में तो ऐसा कुछ भी नहीं हैं मेरे घरवाले पढने भी दे रहे है और काम करने भी। पर जैसे–जैसे मेरी समझ बढ़ी तो मुझे मेरे साथ होने वाले असमान व्यवहार का अहसास हुआ। मैं पहले भी संस्था के साथ जुड़ी थी पर अब मुद्दों की गहराइयों को और भी समझ पाती हूँ की यह क्यों हो रहा है। ये सवाल भी करती हूँ अपने आप से। घर के निणर्य में अपनी बात भी रखती हूँ।

My name is Sushmita, I am studying in the first year of pre-university and I teach others to earn money for my tuition fees. I am the President of the Kishori Manch of the Samagra Shiksha and Vikas Sansthan where we discuss and work on issues regarding teenagers. When I came to the workshop and heard other girls talk about the violence and discrimination they had faced, I used to say it is different at my home, my family allows me to study and work too. But as my understanding grew, I realised how I am treated differently. I was working for girls' rights, but now I understand the depth of the issue, exactly what is happening and I also ask myself these questions. At home, I give my opinion on decisions.

सुम्मी खातून

Summi Khatoon

मेरा नाम सुम्मी खातून है, मैं 19 साल की हूँ, मैंने बारहवी कक्षा पास कर ली है और मैं कॉलेज में प्रवेश लेने वाली हूँ। मैं श्रीनिवासपुरी, दिल्ली में किराये के घर में पिरवार के साथ रहती हूँ।

मैं मुस्लिम पिरवार की हूँ और मेरे पिरवार में लड़िकयों को पाँचवीं कक्षा के बाद पढ़ने की इजाजत नहीं दी जाती, मैंने बहुत संघर्श किया और तकलीफों से गुजरी तािक अपनी पढ़ाई पूरी कर सकूँ। मेरी एक छोटी बहन है और मेरे इस

कदम से उसके लिए भी रास्ते खुले हैं, अब वह भी अपनी पढ़ाई पूरी कर रही है। मुझे फैट से जुड़े हुए चार साल हो गए हैं, यहाँ मैं कई वर्कशॉप में जुड़ीं और मुझे हर बार कुछ नया सीखने को मिला। हम सभी लड़िकयों ने मिलकर सामाजिक मुद्दों पर फिल्म भी बनाई। मुझे फैट में फैलोशिप करने का मौका मिला जिसमे मैंने उन लड़िकयों के साथ काम किया जिनकी पढ़ाई किसी कारण छूट गयी थी या परिवार ने नहीं पढ़ाया था। मैंने समुदाय में काम करना सीखा और जो वेतन मुझे फैट से मिलता था उसे मैं अपनी और अपने भाई–बहन की पढ़ाई पर खर्च करती थी। फैट के एक कायर्क्रम में एंकिरंग भी की, मुझे चुना गया क्योंकि मेरी स्कूल से ही मजबूत आवाज है।

मेरे अंदर जो भी बदलाव आ रहे थे मेरे पापा को पसंद नहीं थे, लेकिन मेरी अम्मी ने मुझे हमेशा एक दोस्त की तरह सहयोग दिया, मेरे लड़की होने की वजह से मुझे हमेशा रोका जाता था लेकिन मैंने कभी हार नहीं मानी। मैंने चार साल में खुद में तो बदलाव देखा ही, आज मैं बहुत खुश हूँ की मुझे मेरे अम्मी और पापा दोनों का सहयोग मिलने लगा है।

मैं अपनी जिंदगी में एक कामयाब इंसान बनना चा. हती हूँ, क्योंकि लोगों को लगता है की एक लड़की सिर्फ घर के काम ही कर सकती है और लड़िकयों से उम्मीद नहीं होती इसिलए मैं अपने समुदाय के लिए उदाहरण बनाना चाहती हूँ। मुझे दूसरों को खुश रखने में खुशी मिलती है। मैं अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती हूँ, मेरे अंदर डर है की मैं इस काबिल हूँ या नहीं लेकिन मुझे आगे बढ़ना है।

My name is Summi Khatoon, I am 19, I have completed school and I am about to take admission into college. I live in Sriniwaspuri, Delhi, in a rented house with my family.

I come from a Muslim family, where girls are not allowed to study after the fifth standard, I have struggled a lot and overcome many hardships to complete my schooling. I have a younger sister and I have also paved the way for her to get an education.

I joined FAT four years ago, I have been a part of many workshops here and have learnt a lot. We girls got together and made a short film.

When I got a chance to work on a fellowship at FAT, I worked with girls who had to drop out of school and those who did not get a chance at education. I learnt how to work in the community and used the salary I earned to pay for my education and for my brother and sister's education. I was also chosen to anchor a program for FAT, as I have had a strong voice since school.

My father did not like the changes that he saw in me but my mother has always supported me like a friend, being a girl I have always been discouraged but I have never given up. In the last four years I have seen many changes in myself and I am glad that I now have the support of both my parents.

I want to be a successful human being, people think that a girl can only do domestic work and they are no expectations from a girl, so I want to be an example for my community. I feel happy when I see the people around me happy. I want to stand on my own two feet, I am afraid that I am not capable, but I just have to get ahead.

उषा मंडल

Usha Mandal

मेरा नाम उषा है। मैं बी.कॉम दूसरे वर्श में पढ़ रही हूँ और लाजपत नगर, नई दिल्ली में रहती हूँ। मैं फैट में पांच साल पहले एक सहभागी के तौर पर जुड़ी थी। मैं यहाँ इसिलए जुड़ पाई क्योंकि फैट में सीखने के पैसे नहीं लगते, मेरे घर की आथिर्क स्थिति इतनी अच्छी नहीं है की मेरे पिरवार वाले मुझे यह सब सिखा पाते, फैट की वजह से मैं तकिनकी शिक्षा ले कर इस क्षेत्र में जुड़ पाई हूँ। यहाँ मैं कंप्यूटर सीखना चाहती थी साथ में और भी काफी कुछ जैसे
कैमरा चलाना और ट्रैवल करना सीखा। मैंने यहाँ कैमरा सीख कर लड़िकयों के साथ मिलकर अभी तक तीन फिल्म बनाई हैं।
अपने अंदर मैंने काफी बदलाव देखे हैं, अब मुझे जहां सवाल करना चािहए मैं वहाँ अपने सवाल पूछ पाती हूँ, अपनी पसंद को लेकर घर पर बात कर पाती हूँ और अपने हक के लिए भी बातचीत करना घर में शुरू कर दिया है। अब घर वाले मुझे समझने लगे हैं, वह मेरी कुछ बातें को मानने लगे हैं लेकिन अभी भी मैं कुछ चीजों में बदलाव लाने की कोिशश कर रही हूँ, क्योंकि एकदम से हम सब कुछ नहीं बदल सकते बदलाव लाने में समय लगता है।

My name is Usha, I am studying in the second year of my Bachelor of Commerce degree and I live in Lajpat Nagar, New Delhi. I joined FAT five years ago as a participant. I was able to come to learn at FAT because they teach students for free, my parents do not have the money to pay for a course like this. It is here that I have been able to get an education in the field of technology and been able to work. I wanted to learn computers and I learnt a lot more like how to use a camera and travelling for work. Along with the girls here I have made three films, using what we were taught in video camera lessons.
I have seen a few changes in myself, now I ask questions when I should be asking them, I talk about my choices at home and have started to speak up for my rights. My parents have started to understand me and accept some of what I want and I am still trying to change a few more things because we cannot hope to transform everything at once, change comes slowly.

वंदना

Vandana

मेरा नाम वंदना है मैं बगाह 2 पश्चिम चंपारण जिले से हूँ और इजाद संस्था के सुकन्या क्लब से जुडी हूँ जिसमे हम लड़िकयों से जुड़े मुद्दे और बाल विवाह के मुद्दे पर बातचीत करते है। मैं अपने घर से बहुत कम बाहर आती जाती थी क्योकि मेरे घर वाले नहीं जाने देते थे लेकिन मेरे चाचा ने बहुत सहयोग किया वह मुझे कहीं आने जाने में नहीं रोकते हैं हमेशा मेरा साथ देते हैं और पापा—मम्मी से भी बात करते हैं। कायर्शाला के लिए पटना आने में उन्होंने ही सहयोग दिया हैं। इस कायर्शाला से जो भी सीखा वह घर पर बताया आज मुद्दों को समझ पाती हूँ और अपने गाँव के लोगो से बात कर पाती हूँ। मेरे घर के अंदर भी बदलाव आया हैं कि आज मुझे इन्टरनेट चलाने के किए फ़ोन भी दिया गया हैं और अपनी पढाई के लिए भी अपने पापा से भी जिद करके बैठी हूँ की मुझे पढना हैं और अपनी इच्छा को बोल पाती हूँ।

My name is Vandana, and I am from Bagah 2, Champaran West district. I am a part of the Sukanya Club, IZAD where we talk about issues related to girls and child marriage. I rarely left my house because my parents never let me, but my uncle supports me, he tries to reason with my parents. It is because of him that I came to Patna for this workshop. Whatever I learnt from this workshop, I discussed with my family, and now I understand issues and can speak about them to people in my village. There has also been a change in the attitude of my family, now I have a phone connected to the internet and I have also started to speak out to my father insisting that I want to be educated.

अंजलि

Anjali

मेरा नाम अंजलि है, मैं 20 साल की हूँ और मैं ओखला, दिल्ली में रहती हूँ। मैंने स्कूल पास कर लिया है, अभी मैं फैट में लेवल 3 सहभागी हूँ। मेरा बचपन से सपना रहा है कि मैं बहुत अच्छे से पढाई करूँ क्योंकि मेरे घर में अभी तक कोई नहीं है जिसने पढाई पूरी की है। मेरा एक और सपना है की मैं अपने लिए और घर वालो के लिए एक घर खरीदूं क्योंकि हमारे पास अपना घर नही है।
मैं पहले घर से बहार नहीं निकलती थी क्योंकि मैं जहां रहती हूँ वहां छेड़खानी बहुत आम बात है, इस माहौल ने मेरे अंदर डर भर दिया था। अभी मेरा डर बहुत काम हो गया है क्योंकि घर वालों ने मेरा बहुत साथ दिया है जिस कारण मेरा खुद पर भरोसा बढ़ रहा है और धीरे धीरे मैंने आत्मश्विास के साथ लोगो से बात करना शुरू कर दिया हैं।

My name is Anjali. I am 20 years old and I live in Okhla, New Delhi. I have finished school and I am a Level 3 participant at FAT. It has been my childhood dream to complete my studies, as no one in my family has done so. I also want to buy a house for myself and my family because we don't have our own home.
Earlier, I was afraid to step out of my house, as eve-teasing is very common where I live and this atmosphere had made me fearful. Now, the support that I get from my family has given me faith in my ability and gradually I have started talking to people confidently.

चंचल

Chanchal

मेरा नाम चंचल है, मैं 20 साल की हूँ और मैं दिल्ली में रहती हूँ। मैं फैट के साथ पांच साल से जुडी हूँ और अभी फैट के यंग विमेंस लीडरशिप प्रोग्राम के लेवल 3 में सहभागी हूँ। मैं अपने परिवार की सबसे बड़ी बेटी हूँ लेकिन कुछ परेशिनयों के कारण मेरी पढाई रुक गई थी और मैं हमेशा सहमी—चुप रहती थी, फिर में फैट के साथ एक सहभागी के तौर पर जुड़ी और यहाँ से बहुत कुछ सीखा, मेरे अंदर कुछ करने की क्षमता बढ़ी। मैंने अपनी पढ़ाई को दोबारा से शुरू किया, अपने घर की छोटी—मोटी जिम्मेदारियों को संभालना शुरू किया जिससे मेरे परिवार वालों का मुझ पर भरोसा बढ़ा और वह मुझे भी एक सहायक के रूप में देखने लगे। इन 5 सालों में मेरे अंदर जो इतना आत्मिवश्वास आया है वो फैट से मिली जानकारी के दौरान आया है, मैं सिर्फ कम्प्यूटर ही सीखने आई थी लेंकिन फैट में आकर मुझे अपने आस—पास के मुद्दों जैसे जेंडर, पितृसत्ता और योनिकता पर समझ मिली, जहाँ मैं रहती हूँ वहां कोई जगह नहीं है जहाँ ऐसी बातें कर सकूं लेंकिन फैट में ऐसा माहौल मिला और अब मैं हर गतिविधि में या वर्कशॉप में अच्छे से भागीदारी लेने लगी हूँ। देखते—देखते पता ही नहीं चला इतना समय बीत गया बहुत कुछ सीख लिया और मेरी जिंदगी में बहुत से बदलाव आए हैं। अभी मैं अपने लिए निणर्य ले सकती हूँ और अब मुझे लगता है की मैं अपने जीवन में नेतृत्व लेने लगी हूँ।

My name is Chanchal. I am 20 years old and I live in Delhi. I have been with FAT for five years and I am a participant in Level 3 of the Young Women's Leadership Program. I am the eldest child of my parents but due to some problems I had dropped out of school and I was meek and silent, then I joined FAT as a participant. I learnt a lot here and my belief in my abilities grew, I restarted my studies, started to take responsibility at home and my family started to look up to me as a source of support.

In these five years the self confidence I have gained has been due to what I learnt at FAT. I came here just to learn computers, but I have understood issues like gender, patriarchy and sexuality. I have no place at home to talk about such things, FAT gave me a space to openly discuss these sensitive issues and now I take an active part in workshops and programs. As time has flown, I have learnt a lot and there have been many changes in my life.

Now I take decisions for myself and I feel that I have started taking control of my life.

पिंकी

Pinki

मेरा नाम पिंकी है और मैं अभी स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग से बी ऐ (दूसरे वर्ष) की पढ़ाई कर रही हूँ। जब मैं कॉलेज में पढ़ने के बारे में सोच रही थी तो मेरे पापा मुझे फार्म नहीं भरने दे रहे थे, मेरी मम्मी ने मुझे दाखिला के लिए पैसे दिए और कॉलेज में मेरा दाखिला करवाया, इस बारे में मेरे पापा को पता नहीं था।
मुझे फैट से जुड़े चार साल हो गए हैं। मैंने फैट में रहकर कम्प्यूटर सीखा, मुद्दों पर समझ बनाई, फोटो खींचना सीखा और फिल्म बनाई है। इस दौरान मैंने जुगाड़ लैब में एक साल की इंटनरशिप की जिसमे मैंने लडिकयों को प्रोजेक्ट बनाने में मदद की। मैंने यह जाना की मैं आगे चलकर फैट में ही जुड़कर काम करना चाहती हूँ। मेरा एक सपना है की मैं टीचर बनना चाहती हूँ लेकिन वैसी टीचर नहीं जो स्कूल में होती हैं, मै जिस तरह की टीचर बनना चाहती हूँ उसे टीचर नहीं फेसिलिटेटर कहते हैं। मैं फेसिलिटेशन सीखना चाहती हूँ ताकि मैं बच्चों को समझ कर उनके साथ काम कर सकूँ, बच्चों के साथ काम करने में मुझे खुशी मिलती है। मैं अपने लिए घर खरीदना चाहती हूँ खुद के पैसों से, जहां मुझे कोई रोकने–टोकने वाला न हो और अपने दोस्तों के साथ एक लम्बे टूर पर जाना चाहती हूँ।

My name is Pinki and I am enrolled in the second year of my B.A. from the School of Open Learning. When I was thinking of studying in college, my father did not allow me to fill the forms, my mother helped me, she gave me the admission fees and got me admitted into college, without my father's knowledge.
I have been with FAT for 4 years. Here, I learnt about computers, understood social issues, was taught how to take pictures and helped to made a film. During this period, I was an intern with the Jugaad Lab for a year, helping girls to make projects. I have realised that I only want to work with FAT in the future.
I have a dream of becoming a teacher but not a teacher like in schools, the kind of teacher I want to be, is called a facilitator. I want to learn facilitation so that I can understand children and work with them, working with children gives me happiness.
I want to buy a house for myself, with my own money, where there is no one to check me or nag me and I want to go on a long holiday with my friends.

प्रीति कुमारी

Preeti Kumari

मेरा नाम प्रीति कुमारी है, मैं 20 साल की हूँ। मैंने स्कूल पास कर लिया है और अभी बी.ए प्रोग्राम में पढ़ रही हूँ। मैं जमरूदपुर, नई दिल्ली में रहती हूँ और मुझे फैट से जुड़े पांच साल हो गए हैं, अभी फैट में पार्टिसिपेंट हूँ। मुझे 2016 में फैट में फेलोशिप करने का मौका मिला जिसमे मैंने बालश्रम से पीड़ित बच्चों के साथ काम किया, इसे करने के बाद मेरा आत्मविश्वास बढ़ा है और अब मुझे लगता है की मैं बच्चों के साथ काम कर सकती हूँ। मैं बच्चों को और उनकी भावनाओ को समझने लगी हूँ क्योंकि मेरा बचपन भी इसी तरह से गुज़ारा है, मैंने भी बचपन में अपनी मम्मी के साथ काम किया है।
मेरा एक सपना था की मैं फैट से जुड़ कर काम करूँ, मेरा यह सपना पूरा हो गया है। बचपन से मेरा एक और सपना रहा है की मुझे पूरी दुनिया घूमनी है और फोटो खींचनी है। फिलहाल मैं एक परेशानी से गुजर रही हूँ मुझे डर है की घरवाले मेरी शादी न कर दें क्योंकि मेरी बड़ी बहन की शादी होने वाली है। मुझे नहीं पता की मैं भविश्य में क्या करना चाहती हूँ। मुझे बस इतना पता है की मैं फैट में ही काम करना चाहती हूँ। मुझे अपने आप पर विश्वास हैं, और भी ज्यादा चीजें सीखने की इच्छा है और आशा है कि फैट में यह सीखने को मिलेंगी।

My name is Preeti Kumari and I am 20 years old. I have completed school and am currently studying in a B.A course. I live in Zamrudpur, New Delhi. It has been 5 years since I have been with FAT, I am a participant in a program here. In 2016, I got a chance to work on a fellowship with FAT, I worked with kids who were forced to do child labour. After completing this program, I feel motivated and confident that I can work with kids as I am able to connect with them and to understand their emotions. This is also because in my childhood, I worked along with my mother.
It was my dream to work with FAT, which I have realised now. Since I was a child I have dreamt of travelling the world and taking pictures.
Right now, there is something that is worrying me, I am afraid my parents will force me to get married as my elder sister will be married soon. I don't know what I want to do in the future, all I know is that I want to work with FAT. I am confident about my ability, I have a desire to learn much more and I am sure that I will get a chance to learn at FAT.

रूबी

Rubi

मेरा नाम रूबी है, मैं 18 साल की हूँ और मैंने अभी बारहवीं कक्षा की पढ़ाई पूरी की है। मैं फैट में दो साल से जुड़ीं हुई हूँ शुरुआत में मैंने एक साल कंप्यूटर सीखा साथ ही सामाजिक मुद्दों पर समझ बनाई इसके बाद मैंने अपने साथ—साथ अपने आस—पास के लोगों को भी जानना शुरू किया।
मैंने अपने आप में बहुत बदलाव देखे हैं पहले मैं अपने दोस्तों के सामने भी नहीं बोल पाती थी क्योंकि मुझे यह डर लगता था की वह मेरी बातों पर हँसेंगे। फैट में आकर मुझमे इतना आत्मविश्वास आ गया है की मैं हर किसी के सामने बोल पाती हूँ। मुझे इस बात से बहुत खुशी है की मैंने अपने घरवालों की सोच में भी बदलाव लाना शुरू कर दिया है और यह बदलाव दिखाई भी दे रहा है। आगे बढ़ने के लिए मुझे कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ा, सबसे बड़ी समस्या थी मेरा परिवार, पर अब उस समस्या को कम करने में मैं कामयाब हो रही हूँ। मेरा सपना है की मैं हर वह काम करूँ जो लोगों का मानना है सिर्फ लड़के ही कर सकते हैं, अपने इस सपने को पूरा करने के लिए मैंने छोटे—छोटे कदम लेने शुरू कर दिए हैं।
जब मैंने पहली बार फैट में आकर काम करना शुरू किया तो मुझे बहुत डर लग रहा था की कहीं कोई गलती न हो जाए पर धीरे धीरे यह देखा की फैट ने मुझे वह जगह दी जिसमे मैं हर वह काम कर और सीख सकूँ जो मैं करना चाहती हूँ। मैंने पहली बार फैट में आकर ही बाहर जाना शुरू किया और बाहर जाकर काम करना शुरू किया, अब मैं बिना डरे कही भी आ—जा सकती हूँ लोगो से बात भी कर सकती हूँ।

My name is Rubi. I am 18 years old and have completed school. It has been two years since I joined FAT, for a year I took computer classes and understood social issues, after this, I started to know and understand myself and the people around me.
I have seen many changes in myself, earlier I would hesitate to speak even in front of my friends because I was afraid they would laugh at me. After joining FAT, I have gained enough confidence to speak in front of anyone. I am glad that I have been able to change the way my family thinks, and that change is visible now. In my desire to get ahead I have had many obstacles, the most difficult one was my family, which now I have been slowly able to overcome. I dream to do everything that people says only boys can do and I have started taking small steps to accomplish this dream.
In the beginning, when I started work at FAT, I was afraid of making mistakes, but at FAT I found the space to learn and work on whatever I wanted to. It was only after coming to FAT that I started going out of my home and working, now I go anywhere without fear and talk to people confidently.

संगीता

Sangeeta

मेरा नाम संगीता है, मैं अभी स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग से बी ऐ (पहले वर्ष) की पढाई कर रही हूँ। मैं अभी (फैट) फेमिनिस्ट अप्रोच टू टेक्नोलॉजी संस्था से तीन साल से दिल्ली में जुडी हुई हूँ। फैट लड़कियों को तकनीकी क्षेत्र में बढ़ावा देता है। यहाँ मैंने एक साथ मिलकर काम करना सीखा जिसे हम कलेक्टिव एक्शन बोलते हैं। इसके बाद मैंने तौर तरीके से काम करना और समुदाय में काम करना सीखा। समुदाय में जाकर काम करने के पहले अनुभव में मेरे अंदर झिझक थी, कैसे मैं लोगो से बात कर पाऊँगी और कैसे उन्हें अपनी बातें समझा पाऊँगी। काफी मेहनत और कोशिश के बाद आज मैं समुदाय में जाकर बात करने से नहीं डरती। मैं अपने अंदर बदलाव देख पा रही हूँ साथ ही मैं अपने घर में अपनी बात बोल पाती हूँ और अब मेरा परिवार एक सहारा है। मैंने बहुत सपने देखे लेकिन कैसे पूरा करुँगी यह सोच पाना मुश्किल हो रहा था इसिलए धीरे धीरे मैंने अपने सपनों को छोड़ दिया। मैं यह भी नहीं सोच पा रही थी की मैं आगे चल कर क्या करुँगी फिर मुझे मेरे फैट के जिरये दोबारा सोचने का मौका मिला और मैंने अपनी पसंद और हित को देखा और अपना रास्ता चुना। अब मैं फैट के साथ जुड़ कर लड़कियों के साथ काम करना चाहती हूँ और उसी क्षेत्र में एक अच्छी फेसिलिटेटर और फोटोग्राफर बनना चाहती हूँ।

My name is Sangeeta. I am studying in the first year of a B.A program, from the School of Open Learning. I have been with Feminist Approach to Technology, FAT for three years. FAT helps girls to get ahead in the field of technology.

Here, I have learnt how to work with others which we call collective action. After that, I learnt how to work in a professional manner and how to work within the community. This was my first experience of working in the community and I was hesitant, how would I be able to speak to people and how would I communicate what I wanted to them. After a lot of hard work and effort, today I am not afraid of speaking out in the community. I see many changes in myself, I have my say at home and now, my family supports me.

I had many dreams but seeing no way of making my dreams come true, I had slowly given up all hope. I was not able to think what I would do in my life, that is when FAT gave me a second chance and I looked at my interests and what would help me and chose my path.

Now, I want to stay with FAT, work with young girls and become a facilitator and photographer.

सरिता

Sarita

मेरा नाम सरिता है, मैं 19 साल की हूँ और अभी बी ऐ, (पहले वर्ष) की पढाई कर रही हूँ। फैट से जुड़े हुए मुझे पांच साल हो गए हैं, मुझे फैट में आना बहुत पसंद है क्योंकि मुझे यहाँ वह जगह मिली है जहाँ मैं अपनी बात बोल सकती हूँ और लोग मेरी बातें सुनते हैं यहाँ आकर मैंने बहुत कुछ सीखा है जिससे मेरा आत्मविश्वास बढ़ा है। मैं आगे चलकर अच्छी तनख्वाह लेकर काम करना चाहती हूँ क्योंकि मैं अच्छे से पढ़ना चाहती हूँ। साथ ही मैं अपनी छोटी बहन को भी पढ़ाना चाहती हूँ, स्कूल के बाद मेरी पढ़ाई बीच में रुक गई थी और एक साल तक मैं कुछ नहीं पढ़ पाई। अब मैं अपनी और अपनी बहन की पढ़ाई के लिए पैसे इकट्ठे कर रही हूँ। मैंने अभी तक जो भी सीखा है उसे और लोगों तक पहुँचाना चाहती हूँ ताकि वह भी सीखें और आगे सिखाएं।

My name is Sarita, I am 19 and studying in the first year of a B.A. program. I have been with FAT for five years, I like coming here because FAT has given me a space where I can speak and others listen to me. I have learnt many things here and have seen my self-confidence grow.
I want to work and get paid a good salary in the future as I want to get a good education. I also want to educate my younger sister, after completing school, for a year I could not study at all. But now I am saving money for myself and my sister's education. I want to share whatever I have learnt here with others so that they also learn and teach others.

रितम

Ritam

मेरा नाम रितम है और मैं कक्षा 12 में पढ़ती हूँ, मैं बिहार के बक्सर जिले के एक गाँव से हूँ और मदद संस्था के साथ जुड़ी हूँ। मुझे पढ़ने का बहुत शौक है लेकिन मेरे घरवाले नहीं चाहते की मैं पढ़ूँ और कहते हैं की खुद से पढ़ो हमारे पास पैसा नहीं हैं। मैं पटना में अपनी संस्था के यहाँ रहकर पढ़ाई कर रही हूँ अपने घर से दूर। अपनी संस्था से फैट की कायर्शाला में आई जिसमे मैंने कैमरा चलना सीखा, मुद्दों के बारे में जाना और अपनी जिंदगी से इन मुद्दों को जोड़ा जिसमे समूह में अपनी बात रख पाना और खुद के बारे में ग़लतफ़हमी को लेकर भी बात की। मुझे लगता था की घरवालो की मर्ज़ी के खिलाफ जा कर कुछ करना अच्छा नहीं हैं। पर अब मैं समझती हूँ की मेरी भी इच्छा का महत्व है और यह गलत नहीं हैं।

My name is Ritam and I study in class 12, I used to live in a village in Buxar district of Bihar and I am associated with MADAD (Society for Mobilization of Action for Dalit Advocacy and Development.) I am very interested in studies but my parents do not want me to be educated and they say that they have no money. I am living in Patna, away from home and getting an education. I came to the FAT Workshop through my organisation after which I learned to use a camera, learnt about issues, linked these issues with my life and spoke amongst a group about misconceptions I had about myself. I thought it was not good to do anything against the wishes of my family, but now I understand that my choice also matters and I am not wrong to demand what I want.

रूबी

Rubi

मेरा नाम रूबी है, मैं 18 साल की हूँ और मैंने अभी बारहवीं कक्षा की पढ़ाई पूरी की है। मैं फैट में दो साल से जुड़ीं हुई हूँ शुरुआत में मैंने एक साल कंप्यूटर सीखा साथ ही सामाजिक मुद्दों पर समझ बनाई इसके बाद मैंने अपने साथ–साथ अपने आस–पास के लोगों को भी जानना शुरू किया।
मैंने अपने आप में बहुत बदलाव देखे हैं पहले मैं अपने दोस्तों के सामने भी नहीं बोल पाती थी क्योंकि मुझे यह डर लगता था की वह मेरी बातों पर हँसेंगे। फैट में आकर मुझमे इतना आत्मविश्वास आ गया है की मैं हर किसी के सामने बोल पाती हूँ। मुझे इस बात से बहुत खुशी है की मैंने अपने घरवालों की सोच में भी बदलाव लाना शुरू कर दिया है और यह बदलाव दिखाई भी दे रहा है। आगे बढ़ने के लिए मुझे कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ा, सबसे बड़ी समस्या थी मेरा परिवार, पर अब उस समस्या को कम करने में मैं कामयाब हो रही हूँ। मेरा सपना है की मैं हर वह काम करूँ जो लोगों का मानना है सिर्फ लड़के ही कर सकते हैं, अपने इस सपने को पूरा करने के लिए मैंने छोटे–छोटे कदम लेने शुरू कर दिए हैं।
जब मैंने पहली बार फैट में आकर काम करना शुरू किया तो मुझे बहुत डर लग रहा था की कहीं कोई गलती न हो जाए पर धीरे धीरे यह देखा की फैट ने मुझे वह जगह दी जिसमे मैं हर वह काम कर और सीख सकूँ जो मैं करना चाहती हूँ। मैंने पहली बार फैट में आकर ही बाहर जाना शुरू किया और बाहर जाकर काम करना शुरू किया, अब मैं बिना डरे कही भी आ–जा सकती हूँ लोगों से बात भी कर सकती हूँ।

My name is Rubi. I am 18 years old and have completed school. It has been two years since I joined FAT, for a year I took computer classes and understood social issues, after this, I started to know and understand myself and the people around me.
I have seen many changes in myself, earlier I would hesitate to speak even in front of my friends because I was afraid they would laugh at me. After joining FAT, I have gained enough confidence to speak in front of anyone. I am glad that I have been able to change the way my family thinks, and that change is visible now. In my desire to get ahead I have had many obstacles, the most difficult one was my family, which now I have been slowly able to overcome.
I dream to do everything that people say only boys can do and I have started taking small steps to accomplish this dream.
In the beginning, when I started work at FAT, I was afraid of making mistakes, but at FAT I found the space to learn and work on whatever I wanted to. It was only after coming to FAT that I started going out of my home and working, now I go anywhere without fear and talk to people confidently.

काजल

Kajal

मेरा नाम काजल है और मैं 21 साल की हूँ। मेरी जनम कुंडली में लिखा है की मैं मांगिलक हूँ और मेरे माँ–बाप इस बात से परेशान हैं, जब मुझे यह बात बताई गई तो मैं बहुत रोई क्योंकि मैंने हमेशा यह सुना था की मांगिलक लोगों की शादी में बहुत दिक्कत आती है।
पंडित ने बताया की इसकी शादी अभी करनी होगी नहीं तो सात साल के बाद ही होगी, इस वजह से मेरे माँ–बाप मेरी शादी करने की बात कर रहे थे। मेरा सपना है की मैं अपनी पढ़ाई को पूरा करना चाहती हूँ और नौकरी करना चाहती हूँ, चार साल पहले तक मुझे कहा जाता था की तेरी शादी अंधे आदमी से करवा देंगे, क्योंकि तू मांगिलक है। मैंने अपने परिवार से बहुत बात की तो उन्होंने मेरी शादी टाल दी है, जिस वजह से मैं अभी खुश हूँ।

My name is Kajal and I am 21 years old. My horoscope says I am a manglik (inauspicious astrological combination) and my parents are worried, when I was told about this I cried a lot because I had always heard that people who are manglik find it difficult to get married. The priest told my parents that they should get me married now or it would only happen after seven years, so my parents were talking about marrying me.
I have a dream that I can complete my studies and then get a job, until four years ago I was told I would be married to a blind man because I am a manglik. I pleaded with my family so they have postponed my marriage for now, which makes me happy.

अंजलि

Anjali

मेरा नाम अंजलि है, मैं 15 साल की हूँ, दसवीं कक्षा में पढ़ती हूँ और मैं श्रीनिवासपुरी, नई दिल्ली में रहती हूँ। मैंने पढ़ाई करने के साथ फैट में आकर कंप्यूटर, फिल्म मेकिंग और फोटोग्राफी सीखा और कई वर्कशॉप में जुड़ कर बहुत कुछ सीखने को मिला। फैट में जुड़ कर मेरा आत्मविश्वास बहुत बढ़ा, मैं अपने दोस्तों को भी अपने कौशल के बारे में बताती हूँ और उनके काम में उनकी मदद भी करती हूँ। मैं भविश्य में बहुत कुछ करना चाहती हूँ और मैं अभी बहुत छोटी हूँ मगर मेरे लिए लड़कों के रिश्ते आते हैं। मेरे मम्मी पापा उन्हें मना कर देते हैं यह बोल कर की मैं अभी छोटी हूँ, लेकिन मैं अपनी बहन की ज़िन्दगी के बारे में बताना चाहती हूँ।

मेरी एक बहन है जो गांव में अपनी मम्मी के साथ रहती थी, जब वो 16 साल की हुई तो मेरे मौसा—मौसी ने उसके लिए लड़का देखना शुरू कर दिया। मेरी मौसी कुछ दिनों के लिए दिल्ली आई, उन्हें यहाँ एक लड़का पसंद आया और उन्होंने बिना पूछे मेरी बहन की शादी तय कर दी।

उसको बाद में बताया गया तो मेरी बहन ने मना किया बोला मुझे अभी शादी नहीं करनी अभी मैं छोटी हूँ, मुझे पढ़ना है, लेकिन उन्होंने बात नहीं मानी और उसकी जबरदस्ती शादी करवा दी। उसने शादी तो कर ली लेकिन शादी के कुछ महीने बाद उसके पति को उसके ऊपर शक होने लगा की उसका किसी दूसरे के साथ चक्कर चल रहा है। शादी के एक साल बाद उसका एक बेटा हुआ, उसके बाद तो उसके पति ने हद ही कर दी, अगर वो अपने देवर के साथ भी बात करती, या किसी आदमी से बात करती तो वो उसे गन्दी—गन्दी गालियाँ देता और मारता पीटता। अभी उसके पेट में दूसरा बच्चा है और उसका पति दो—तीन साल से घर पर खाली बैठा है, मेरी बहन उसके और उसके परिवार के ताने और गालिया सुनती है और घर का सारा काम अकेले करती है।

कुछ हफ्ते पहले जब मेरी बहन ने अपने पति को कहा, काम करो वरना इस बच्चे को गिरवा दूँगी, मुझे खिलाएगा कौन तो पति ने उसे बहुत मारा, पूरे खानदान को बहुत गालिया दी और बोला अगर मेरे बच्चे को कुछ हुआ तो अपने आप को मार दूँगा। मैं अपने

परिवार के लिए बोली तो उसने मुझे भी बहुत गन्दी गाली दी। मैंने अपनी बहन को समझाया तो उसे कुछ समझ आया और अब वह उसे तलाक दे रही है और अपने पैरों पर खड़ी हो रही है। कुछ ऐसा ही मेरे मम्मी पापा के साथ भी था, मेरे पापा मेरी मम्मी को दारू पीकर गालिया भी देते थे और मारते भी थे, मैंने अपनी मम्मी से कई बार पूछा की आप कैसे सह रही हो, फिर मैंने अपने पापा को भी समझाया की औरतों पर हाथ उठाना अच्छी बात नहीं हैं। अब मेरे मम्मी पापा समझते हैं, और पापा मम्मी को अब कुछ नहीं बोलते हैं। मैंने अपने घर में मुद्दों को लेकर बातचीत करना शुरू किया तभी मैं अपने घरवालों को जागरूक कर पाती हूँ और उनसे खुल कर बात कर पाती हूँ।

My name is Anjali, I am 15 years old, study in class X and live in Srinivaspuri, New Delhi. Along with my education in school, I came to FAT, studied computers, film making and photography, attended many workshops and learnt a lot. Coming to FAT has given me a new self-confidence, I tell my friends about my skills and help them in their work.

I want to do a lot in future and I am still very young but I have started getting proposals for marriage. My parents refuse and tell the people that I am young now, but I want to tell you about my cousin sister's life.

I have a sister who lived with her mother in the village, when she was 16, my aunt and uncle started looking for a boy for her. My aunt came to Delhi for a few days, liked a boy here and fixed my sister's marriage without asking her

Later, when my sister was told she refused, she said she was too young to get married and she wanted to study but her parents did not listen and she married her off forcibly. She accepted the marriage but a few months into it, her husband began to suspect that she was having an affair with another man. After a year of marriage, they had a son and that is when it became unbearable, if she spoke with any man, even her husband's younger brother he would abuse her and beat her. Now she is pregnant again and her husband has been sitting idle at home for two-three years, my sister listens to his and his family's taunts and abuses and does all the work at home, alone.

A few weeks ago my sister told her husband 'who will feed us, get a job or I will abort the child,' her husband beat her up, abused her whole family and said if anything happened to his child he would kill himself. He also gave me a few choice abuses when I stood up for my family. I spoke to my sister and she somehow understood, now she has filed for divorce and is trying to be independent.

It was similar with my parents at home, my father used to drink alcohol and then abuse and beat my mother. I used to ask my mother how she takes it and I also explained to my father that hitting a woman is not right. Now my parents understand and my father does not hit my mother. I started talking about these issues at home which is why I can make my family aware and speak freely with them.

खुशबू

Khushbu

मेरा नाम खुशबू है, मैं 19 साल की हूँ, अभी कॉलेज के दूसरे वर्ष में पढ़ रही हूँ और श्रीनिवासपुरी, नई दिल्ली में रहती हूँ। मैंने फैट से जुड़ कर बहुत कुछ सीखा और मैंने अपने समुदाय में जाकर मुद्दों को लेकर लोगों से बातचीत करना शुरू किया। जब लोग हम से फैट के बारे में बात करते हैं तो हम उन्हें बताते है की हमारा फैट क्या करता है, क्यों करता है और किसके लिए करता है। मैंने फैट से जुड़ कर नारीवाद पर अपनी समझ बढ़ाई और मैंने कम्प्यूटर और फिल्म मेकिंग सीखा, मुझे नयी चीजें सीखना अच्छा लगता है।
जब मैं कॉलेज में आई तो मेरे ऊपर शादी का दबाव आने लगा क्योंकि मेरे घर वाले मेरी शादी की बातें कर रहे थे। मैंने बोला की मुझे अभी शादी नहीं करनी मुझे पहले पढ़ना है क्योंकि मुझे पढ़ना अच्छा लगता है, मेरी बहन ने भी मेरा साथ दिया और हमारे बहुत बोलने के बाद पापा ने बात मान ली, अब मुझे शादी के लिए नहीं बोलते और मैं आगे पढ़ाई कर रही हूँ। मैं अपनी इच्छा घर में ज़ाहिर कर पाई क्योंकि मुझे अपने अधिकार की समझ थी और मालूम था की कुछ निणर्य हमें अपने लिए खुद लेने पड़ते हैं।

My name is Khushbu, I am 19, currently studying in the second year of college and I live in Srinivaspuri, New Delhi. I learned a lot after joining FAT and I went into my community and started talking to people about issues. When people speak to us, we tell them what FAT does, why we do that and for whom we work. I learnt more about feminism after joining FAT and also learnt about computers and film making, I like learning new things.
As I entered into college, the pressure on me to get married started building as my family members started discussing my marriage. I said that I do not want to marry now, I want to study, because I like to read, my sister supported me and we requested my father a lot until he accepted my demand. Now my parents do not speak about my marriage at home and I am able to study. I could speak up about what I desired at home because I knew my rights and I knew that we have to take some decisions for ourself.

निकिता

Nikita

मेरा नाम निकिता है, मैं 16 साल की हूँ और नेहरू नगर, दिल्ली में रहती हूँ। मेरी बहन ने प्रेम विवाह किया था जिसका ज़िम्मेदार मुझे माना गया, सभी लोग मुझे ही डाँटते और ताने देते थे। सब यह सोचते थे की मैंने अपनी बहन को भगाया है, मुझे घर से बाहर नहीं जाने देते थे और सब दरवाजा बंद करके खुद घर से बाहर चले जाते थे। ऐसे करते–करते उन्हें दो से तीन महीने हो गए। फिर मैंने बोला की मैंने अपनी बहन नहीं भगाया और आप सभी मेरे साथ ऐसा क्यों कर रहे हो। धीरे–धीरे उन्होंने मेरी बात को समझना शुरू किया, मैं बाहर आने जाने लगी और मैं अभी स्कूल जाने लगी हूँ। फिर किसी ने मुझे आने जाने से रोका या टोका नहीं। मैं बहुत खुश हुई की अब मैं अपनी पढ़ाई कर रही हूँ और अब मेरे घरवाले मुझे नहीं मारते।

My name is Nikita, I am 16 years old and live in Nehru Nagar, Delhi. My sister married for love which I was held responsible for, everyone scolded me and constantly taunted me. Everyone thought that I had helped my sister run away, I was not allowed out of the house and my family would leave after locking the door behind them. This happened for two to three months.
Then I said that I was not the one who helped my sister run away and asked them why are you all doing this to me? Gradually they have started to understand my point, I was allowed out of my home and I am going to school now. Now, no one stops from going anywhere. I am very happy that I am able to study and my family does not beat me anymore.

नेहा

Neha

मेरा नाम नेहा है और मैं 15 साल की हूँ मेरा सपना है की मैं टीचर बनाना चाहती हूँ लेकिन अपने सपने को पूरा करने में मुझे काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। मेरे घर में लड़कीयों और लड़को में काफी भेदभाव किया जाता है, जब मैंने अपने परिवार को बताया की मैं टीचर बनाना चाहती हूँ तो मेरे परिवार के लोगों ने कहाँ की तू लड़की है, टीचर नहीं बन सकती ये काम तो लड़कों का होता है, लड़कीयों की दसवीं कक्षा के बाद शादी करा देनी चाहिए।
मेरी बहन की शादी जल्दी करा दी गयी थी जिस वजह से उसके सपने पूरे नहीं हो पाए और मुझे डर है की मेरी शादी भी जल्दी ना करा दें और मेरा सपना भी अधूरा न रह जाये। मैं किसी पर निभर्र नहीं रहना चाहती हूँ, मैं अपनी पढ़ाई पूरी करना चाहती हूँ, अपना सपना पूरा करना चाहती हूँ। मुझे खुशी है कि मेरे पापा तो मेरा साथ देते हैं लेकिन मेरे दादा–दादी हमेशा यही कहते हैं लड़की बड़ी हो गयी शादी करवा दो लेकिन मैं भी उन्हें दिखा दूँगी की एक लड़की भी कुछ बन सकती है।

My name is Neha and I am 15 years old. I dream to be a teacher but I have many obstacles in my way. My family discriminates between girls and boys. When I told them that I want to be a teacher, I was told, you are a girl, you can not be a teacher, this is a boy's job, girls should get married after Xth standard.
My sister was married early and she could not see her dreams become a reality, I am afraid that I will also be married soon and will have to forget my dreams. I do not want to depend on anyone, I want to complete my studies, and I want to fulfil my dream. I am happy that my father supports me, my grandparents always say, this girl has come of age, get her married, but I will show them that a girl can also become something.

सोनिया

Sonia

मेरा नाम सोनिया है, मैं अपनी पढ़ाई स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग से पूरी कर रही हूँ। मुझे नाचना बहुत अच्छा लगता है, मैं एक बहुत अच्छी डाँसर बनना चाहती हूँ और मेरे घर वाले मुझे हर चीज सीखने के लिए सहयोग देते हैं। मैंने अपने समुदाय में देखा है की लड़कीयों की शादी जल्दी कर देते हैं, लड़कियों को पढने नहीं देते हैं। दसवीं कक्षा के बाद उनकी पढ़ाई छुड़वा देते हैं क्योंकि लड़कीयों को घर का काम सिखाया जाता है ताकि शादी के बाद उन्हें दिक्कत न हो। लड़की का बाहर आना–जाना बंद कर दिया जाता है, शायद हमारे घर वाले यह सोचते हैं की कहीं हम अपनी मर्जी से शादी न कर लें।
मैं अपने परिवार को समझाती हूँ की मैं ऐसा कुछ नहीं करूंगी क्योंकि मुझे पढना है और कुछ बन कर दिखाना है, शादी करने से मैं अपनी जिंदगी में आगे नहीं बढ़ पाऊँगी। जब मैं 15 साल की थी मेरे लिए एक रिश्ता भी आया था, मैंने अपनी मम्मी पापा को मना तो लिया कि मेरी शादी न करें लेकिन मुझे बीच में अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ी थी। अब मैंने अपनी पढ़ाई फिर शुरू कर ली है और मैं पढ़ भी रही हूँ और नाचती भी हूँ।

My name is Sonia, I am enrolled to study at the School of Open Learning. I like dancing a lot, I want to be a good dancer and my parents have supported me in my desire to learn new things.
I have seen that in my community, girls are married-off very soon and not allowed to study. Girls drop out of school after Xth standard because they need to be taught domestic chores so that there are no problems after marriage. A girl's movements are restricted, maybe our families are scared that girls will marry whom they choose.
I try to tell my family that I will do no such thing because I want to study and become someone, if I am married, I will not be able to move ahead in life. When I was 15, there was a marriage proposal for me, I was able to convince my parents not to marry me, but I had to drop out of school. Now I am back in school, getting an education and I dance too.

प्रिया

Priya

मेरा नाम प्रिया है और मैं 16 साल की हूँ, मैं अपनी ज़िंदगी में एक छोटी सी लड़ाई लड़ रही हूँ। मेरे घर में हमेशा बाहर आने–जाने को लेकर रोक–टोक रही है। मैं जब भी घर से बाहर जाती हूँ तो मेरा भाई मुझे डाँटता है और कभी–कभी मुझे मारता भी है। मेरे परिवार वाले मुझे फैट आने के लिए भी मना करते हैं वो कहते हैं की तुम फैट के बहाने कहीं और जाती हो, और लोग यह भी कहते हैं की प्रिया इतनी देर कहाँ रहती है। मैं भी अपने भाई से कहती हूँ कि लोगों की क्यों सुनते हो, मैं फैट में कुछ सीखने ही जाती हूँ और मैं फैट आती हूँ भले ही मेरा भाई मुझे मना करे। जब मेरी बहन की सगाई हुई तो उसे कहाँ गया कि उसे बारहवी तक पढ़ाएंगे लेकिन उसका नया परिवार अपनी बात से पलट गया, इसिलिए मैंने सोचा है शादी मैं जांच परख कर ही करूंगी।

My name is Priya and I am 16 years old and I am fighting this small battle in my life. My family has always discouraged me and stopped from going outside my home. Whenever I step outside the house my brother scolds me and sometimes he even hits me. My family forbids me from coming to FAT, they say that you lie to us and go elsewhere giving the excuse of FAT, people also ask where does Priya stay out for so long. I tell my brother why do you listen to others, I go to learn something at FAT and even when my brother forbids me, I still come to FAT. When my sister got engaged, she was told she would be able to complete her studies until XIIth standard but her new family went back on their word, so I have decided that will I be very careful when I choose to marry.

फेमिनिस्ट अप्रोच टू टेक्नोलॉजी (फैट) के बारे में

About Feminist Approach to Technology (FAT)

फेमिनिस्ट अप्रोच टू टेक्नोलॉजी (फैट)

फेमिनिस्ट अप्रोच टू टेक्नोलॉजी संस्था विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में लिंग अंतर को कम करने के लिए महिलाओं और लड़कियों के साथ काम करती है। हमारा ध्यान प्रौद्योगिकी कौशल के माध्यम से लड़कियों में नेतृत्व की भावना को जगाना है। हमारा मानना है कि हर लड़की में वह क्षमता है की अपनी जिन्दगी में नेतृत्व ले और अपने समाज में परिवर्तन लाये, हम इस नेतृत्व को जगाने के लिए प्रौद्योगिकी शिक्षा का उपयोग करते हैं। हम न केवल अपने कार्यक्रमों के माध्यम से, बल्कि हमारी अपनी टीम और संचालक मंडल के भीतर भी लड़कियों के नेतृत्व को भूमिका देते हैं। इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए हमने एक युवा महिला नेतृत्व कार्यक्रम (यंग विमेंस लीडरशिप प्रोग्राम) विकसित किया है जिसे हम भारत में पांच टेक सेंटर में चलाते हैं।

दिल्ली में लाजपत नगर,
बिहार में पटना,
झारखंड में गिरिधि और पलामू और
महाराट्र में पुणे

जिन लड़कियों के पास उचित शिक्षा के माध्यम नहीं हैं, उन लड़कियों का विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित में कौशल बनाने के लिए हम एक परियोजना भी चलाते हैं। दिल्ली में जुगाड़ (इनोवेशन) लैब अब 2 साल से एक पायलट के रूप में चल रहा है।

Feminist Approach to Technology (FAT)

FAT works with women and girls to close the gender gap in science & technology. Our focus area is building girls' leadership while teaching them technology skills. We believe that every girl has the potential to be a leader and a change-maker and we use technology education to facilitate this leadership. We are committed to nurturing girl leaders not only through our programs, but also within our own team and our leadership team. To achieve this goal we have developed a Young Women's Leadership Program (YWLP) that we run across five Tech Centres in India.

Lajpat Nagar in Delhi,
Patna in Bihar,
Giridhi and Palamu in Jharkhand and
Pune in Maharashtra.

We also run a project to build (Science, Technology, Engineering and Mathematics) STEM acumen of girls who have not had access to a quality education. The Jugaad (Innovation) Lab in Delhi has been running as a pilot for 2 years now.

इस पुस्तक और लघु फिल्म को हम ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक पहुँचाना चाहते हैं। जो आपने पढ़ा और देखा अगर आपको अच्छा लगा तो कृपया इन्हें ऐसे किसी व्यक्ति को पास करें जो आपकी तरह इन्हें देखना पसंद करेगा।
हमने मेहनत करके इन कहानियों के जरिये अपने जीवन की सच्चाई को एक ईमानदार रूप से दिखाने का प्रयास किया है।
साथ ही, कृपया उस व्यक्ति का नाम लिखें जिसे आपने यह पुस्तक दी और अपने विचार भी लिखें, यह हमें इसे पढ़ने वालों की शृंखला देखने में मदद करेगा।

अगर आप अपनी प्रतिक्रिया, टिप्पणियां या समर्थन देना चाहते हैं तो ईमेल या कॉल करें
ईमेल – fat@fat-net.org
टेलीफोन – 011-41004951/41320391

We want this book and short film to reach the largest audience. If you like what you read and see, please pass this book on to anyone whom you feel will like to read it and watch the film.
We have put all our hard work and effort into making these stories an honest look into our lives.
Also, please write the name of the person you gave this book to and your thoughts, this will help all those who read it to see the chain.

If you want to give your feedback, comments or support
email: fat@fat-net.org
phone number: 011-41004951/41320391

From/देने वाली	To/किसको दिया	Comments/टिप्पणी

From/देने वाली	To/किसको दिया	Comments/टिप्पणी

The following partners helped us to reach out to girls in Bihar

Bihar Sewa Samiti
http://bssind.org
Kutchery Road, Madhubani-847211, Bihar

National Institute for Rural Development, Education, Social upliftment and Health (NIRDESH)
http://www.nirdesh.org
Village Majhaulia, Post Khabra,District Muzaffarpur-843146, Bihar

Samagra Shikshan Evam Vikash Sansthan
http://www.ssevs.org
J.P. Smriti Kutir, Subhash Nagar Near K.R. High School Bettiah, West Champaran

IZAD
http://www.izadpatna.org.in
Road No. 13C, Rajendra Nagar, Patna, Bihar

Society for Mobilization of Action for Dalit Advocacy and Development (MADAD)
http://madadbihar.org
XTTI Main road, DIgha Ghat,
Patna-800011, BIhar

Gaurav Gramin Mahila Vikas Manch
Parsa Bazar, Bodha Chak Road, Naharpar
Patna-804453, Bihar

Made possible with support from

American Jewish World Service

The David and Lucile Packard Foundation

Global Fund for Women

All Team members of Feminist Approach to Technology

Editor: Saurabh Yadav
Designer: Partha Pratim Sharma

Feminist Approach to Technology

134, 3rd Floor, Vinobapuri, Lajpat Nagar – II, New Delhi 110024, India
+91-11-41320391, 41004951
email: fat@fat-net.org; website: www.fat-net.org